Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

बद्धे विसयपासेहिं,
मोहमावज्जइ पुणो मंदे।

जो विषय-पाश में आबद्ध होता है, वह मंद मनुष्य फिर मोह में फँस जाता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 10 • 12 - 18 दिसंबर, 2022 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 10-12-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

जीवन में सारभूत ज्ञान को ग्रहण करने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

चंडावल, ३ दिसंबर, २०२२

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः धवल सेना के साथ १४ किलोमीटर का विहार कर चंडावल पधारे। अमृत देशना प्रदान करते हुए महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि जीवन में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। अज्ञानी क्या जान पाएगा कि श्रेय क्या है, कल्याणकारी क्या है और पाप क्या है?

ज्ञान प्राप्ति के लिए अध्ययन करने की भी अपेक्षा होती है। स्वाध्याय से ज्ञान विकसित हो सकता है। ज्ञान प्राप्त होने पर आदमी एकाग्रचित्त वाला बन सकता है। स्वयं सन्मार्ग पर चल अच्छे कार्यों में स्थित हो सकता है। ज्ञान एक पवित्र तत्त्व है। आगम साहित्य में स्वाध्याय की प्रेरणा दी गई है।

नींद लेना स्वाध्याय करने में बाधक तत्त्व बन सकता है। जो बातें अच्छी नहीं हैं, उन बातों में रस लेना स्वाध्याय में बाधक बन सकता है। स्वाध्याय-अध्ययन के अनेक आयाम हैं। कंठस्थ ज्ञान करना भी एक आयाम है। शब्द शास्त्र का कोई पार नहीं है, अनेक विषयों के ग्रंथ हैं। अच्छे कार्यों में विघ्न भी आते हैं, समय भी सीमित है पर जो सारभूत है, उसे पढ़ना चाहिए। यह आचार्य संयमभव के प्रकरण से समझाया।

हम अभी मारवाड़ विचर रहे हैं, जो आचार्य भिक्षु की विहरण भूमि रहा है। हम सारभूत ज्ञान जीवन में ग्रहण करने का प्रयास करते रहें। आज चंडावल आए हैं। यहाँ के लोगों में खूब धार्मिक-आध्यात्मिक भावना रहे, मंगलकामना।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया। आचार्यप्रवर ने सांध्यकालीन ६ किमी विहार कर साण्डिया ग्राम पधारे।

सायं काल में आचार्यश्री महाश्रमण की मंगल सन्निधि में पहुँचे केंद्रीय मंत्री पीपी चौधरी

क्षेत्रीय सांसद व कॉर्पोरेट मामलों के केंद्रीय राज्यमंत्री पीपी चौधरी ने आचार्यश्री को विधिवत वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। पीपी चौधरी से आचार्यश्री का संक्षिप्त वार्तालाप का भी क्रम रहा। आचार्यश्री के दर्शन से हर्षित पीपी चौधरी आचार्यश्री से मंगलपाठ का श्रवण कर अपने गंतव्य को रवाना हो गए।

संसार सागर को पार करने के लिए संवर और निर्जर की साधना हो पुष्ट : आचार्यश्री महाश्रमण

सोजत रोड, ५ दिसंबर, २०२२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः बगड़ी से ७ किलोमीटर विहार कर सोजत रोड स्थित तेरापंथ भवन पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए शांतिदूत ने फरमाया कि भवसागर को तरने की बात आती है। यह संसार जन्म-मरण की परंपरा, ८४ लाख जीव योनियों का यह जगत, यह एक सागर-अरणव है। इस सागर को तरने की इच्छा है, तो नौका चाहिए। यह शरीर, मनुष्य जीवन नौका है। ये जीव भाविक है।

जो महर्षि है, वे इस नौका के द्वारा यात्रा करके इस संसार समुद्र का पार पा सकते हैं, तर सकते हैं। इस मानव जीवन रूपी नौका में अगर छिद्र है, वो नौका तो डुबोने वाली हो सकती है। आश्रव छिद्र होते हैं। ये जीवन में है, तो कर्म रूपी पानी आ जाएगा और नौका डुबोने वाली बन जाएगी। इस आश्रव रूपी छिद्र को बंद करें।

नौका को आगे चलाने के लिए तपस्या करें तो कर्म झड़ते जाएँगे। यह संसार समुद्र तिरण हो जाएगा। संवर और निर्जरा की साधना पुष्ट होगी तो संसार सागर पार हो जाएगा। संवर और निर्जरा में ज्यादा महत्त्वपूर्ण संवर है। संवर हर किसी जीव के नहीं होता। सिर्फ थोड़ा संवर संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय व संज्ञी मनुष्य के ही होता है और किसी के नहीं होता। निर्जरा तो मिथ्यात्वी के भी हो सकती है, पर संवर दुर्लभ है। (शेष पृष्ठ २पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
12 - 18 दिसंबर, 2022

✦ *दीर्घकालीन नीति सोच-विचार कर बनाओ। तात्कालिक स्थितियों के आधार पर भावुक होकर उसमें परिवर्तन मत करो।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

महामना भिक्षु की अभिनिष्क्रमण भूमि पर वर्तमान महामहिम आचार्यश्री महाश्रमण का पदार्पण

त्याग की चेतना की पावन भूमि है बगड़ी : आचार्यश्री महाश्रमण

बगड़ी नगर, ४ दिसंबर, २०२२

तेरापंथ धर्मसंघ का ऐतिहासिक स्थल बगड़ी जहाँ आचार्य भिक्षु की सांसारिक अवस्था में शादी हुई थी। उनकी दीक्षा भी पूज्य रघुनाथ जी के करकमलों से यहीं पर हुई थी। बाद चैत्र शुक्ला नवमी वि०सं० १८१७ को रघुनाथजी के संघ से अभिनिष्क्रमण किया था। बगड़ी की जैतसिंह की छत्री आज भी कह रही है कि संत भीखण ने जब अभिनिष्क्रमण किया था तो प्रथम रात्रि का प्रथम पड़ाव यहीं हुआ था।

आज उसी स्थल पर आचार्य भिक्षु के परंपर-पट्टधर, तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी पधारे। महातपस्वी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि ८४ लाख जीव योनियाँ बताई गई हैं। उनमें यह मनुष्य जन्म दुर्लभ होता है। लंबे काल तक भी कई बार प्राणी को मनुष्य जन्म नहीं मिलता। कर्मों के गाढ़ विपाक से मनुष्य जन्म की प्राप्ति मुश्किल हो जाती है। इसलिए गौतम के नाम संदेश दिया गया कि गौतम! समय मात्र प्रमाद मत करो।

दुर्लभ मानव जीवन का उपयुक्त प्रयोग करना चाहिए। इस मानव जीवन को जो पाप-भोग, विलास, व्यसन में बीता सकता है, तो वे मानव जीवन में धर्म की साधना भी कर सकता है। जो आदमी मानव जीवन को प्राप्त कर पाप में जीवन बिताता है, वह आदमी मानो अपने घर में कल्पवृक्ष को उखाड़ फेंककर उस जगह धतुरे का पौधा लगाने का प्रयास करता है।

सारे आदमी साधु तो नहीं बन सकते पर जीवन में मानवता से नीचे न जाएँ। गृहस्थ में रहकर भी कदाचार, भ्रष्टाचार से बचें। अहिंसा, नैतिकता, संयम का जीवन जीने का प्रयास करें तो इस मानव जीवन की गरिमा बनी रह सकती है।

आज हम बगड़ी आए हैं। मारवाड़ के क्षेत्रों में बगड़ी, कंटालिया और सिरियारी—ये तीन क्षेत्र हमारे परम वंदनीय आचार्य भिक्षु से जुड़े हुए हैं। बगड़ी उनकी अभिनिष्क्रमण और त्याग की चेतना की भूमि है। उनके दीक्षा स्थल वट, बड़ला भी आज मैं जाकर आया था। त्याग का पथ वहाँ स्वीकार किया था। दूसरा अभिनिष्क्रमण संन्यास से विशेष साधना के लिए हुआ था। सांसारिक जीवन का रिश्ता भी बगड़ी के साथ है। आचार्य भिक्षु ने मानव जीवन को कितने बढ़िया ढंग से जीना स्वीकार किया था।

दुनिया में कोई-कोई व्यक्ति ऐसा होता है, जो कुछ विशेष करने का सामर्थ्य रखता है। दो चीजें हैं—शांति और क्रांति। शांति का महत्त्व बहुत है। शांति के साथ जहाँ जरूरत है, क्रांति भी हो जाए। निम्न श्रेणी के लोग वो होते हैं, जो विघ्न के भय से कोई अच्छे कार्य का प्रारंभ ही नहीं करते हैं। मध्यम श्रेणी के वे जो कार्य प्रारंभ तो कर देते हैं, पर जब विघ्नों की बौछार आती है, तो कार्य को बीच में ही छोड़ देते हैं। उत्तम श्रेणी के लोग वे होते हैं, जो बार-बार विघ्नों से आहत होने पर भी वे अपने स्वीकार किए हुए मार्ग को नहीं छोड़ते।

आचार्य भिक्षु के सामने भी कितनी कठिनाइयाँ आई होंगी, किंतु जो महापुरुष साधक, आत्मबली और मनोबली होते हैं, वे कठिनाइयों की इतनी परवाह नहीं करते। अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं। मैं जैतसिंह की छत्री के प्रांगण में भी जाकर आया था। ये ऐतिहासिक स्थल है। क्रांति के साथ कठिनाई साथ हो गई थी।

ये भगवान का जो पावन पथ है, उस पर जो कठिनाई को भी झेलकर चले और संकल्प हो, उसका बड़ा महत्त्व होता है। 'प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर जीवन अर्पण है सारा।' गीत का सुमधुर संगान पूज्यप्रवर ने किया। हमारे भीतर

की त्याग की चेतना, कठिनाइयों को झेलने के मनोबल की चेतना पुष्ट रहे, यह काम्य है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि आचार्यप्रवर आज वहाँ पधारे हैं, जहाँ आचार्य भिक्षु ने चार-चार चातुर्मास किए थे। यहाँ मुनि भिक्षु ने नया जन्म प्राप्त किया था। वि०सं० १८१७ में जीवन की नई यात्रा का शुभारंभ किया था। यात्रा शुरू करते हैं, तूफान आया और जैतसिंह की छत्री प्रथम प्रवास स्थल बन गया था। अनेक कष्ट उनके सामने आए पर उन्होंने शांति से सहन किए थे। आचार्यप्रवर हमें आचार निष्ठा, मर्यादा निष्ठा, अनुशासन निष्ठा का पाठ पढ़ाते हैं। हमारी गुरु निष्ठा बनी रहे।

पूज्यप्रवर के स्वागत में प्रवासाध्यक्ष जयंतीलाल सुराणा, स्थानीय महिला मंडल, संतोष धारीवाल (सभामंत्री), ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी, ठाकुर साहब भगवंत सिंह, स्थानीय सरपंच भुंडाराम चौधरी, एस०एस० जैन संघ से अशोक कोठारी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। अणुव्रत समिति से सुरेश दवे ने भी भावना व्यक्त की।

मुनि यशवंत कुमार जी, साध्वी सिद्धप्रभा जी ने अपने-अपने चातुर्मास संपन्न कर श्रीचरणों में उपस्थित हो अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हमारे साधु-साध्वियाँ आए हैं। सभी के खूब चित्त समाधि रहे। विकास करते रहें। यह परमपूज्य भिक्षु स्वामी से जुड़ा स्थान है। इस स्थल का नाम आचार्य भिक्षु समवसरण रखा जा सकता है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि साधु बैठ्या समता में, गृहस्थ बैठ्या ममता में। साधु तो संयोग और घर से मुक्त भिक्षाचर होते हैं।

संसार सागर को पार करने के लिए संवर और...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मानव जीवन में धर्म की विशेष साधना हो सकती है। जब तक शरीर की सक्षमता है, जो करना हो सो कर लो। अक्षमता होने पर कठिनाई हो सकती है। बुढ़ापा, बीमारी, अक्षमता के कारण है। इंद्रियाँ कमजोर पड़ जाने से भी अक्षमता आ सकती है। इसलिए क्षण भर भी प्रमाद मत करो। आचार्य भिक्षु भी अंतिम समय तक पुरुषार्थ करते थे। उनके जीवन से हम प्रेरणा लेने का प्रयास कर सकते हैं।

तेरापंथ को मारवाड़ के बहुत अवदान हैं। आचार्य भिक्षु, जयाचार्य और गुरुदेव तुलसी यहाँ से हुए हैं। इस भूमि में हमारा विचरण संक्षेप में हो रहा है। सन् १९९१ में मैंने सिवांची-मालानी की यात्रा कर गुरुदेव तुलसी के यहाँ दर्शन किए थे। हम इस शरीर की सक्षमता का अच्छा उपयोग करें। धर्म की आराधना में उपयोग करते रहें, यह अपेक्षा है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि कांठा प्रदेश की यात्रा में पूज्यप्रवर का सोजत में आगमन हुआ है। भारतीय साहित्य में दो शब्द महत्त्वपूर्ण हैं—गुरु और परमात्मा। दोनों का महत्त्व है। आत्मा का साक्षात्कार तभी होता है, जब गुरु का मार्गदर्शन प्राप्त होता है। गुरुकृपा से ही व्यक्ति विकास कर सकता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में सभाध्यक्ष संपतराज परमार, तेरापंथ महिला मंडल, स्थानकवासी संघ से खुशाल सुंदेचा, मूर्तिपूजक संघ से अमृत गुगलिया, व्यवस्था समिति से विमल सोनी, सरपंच लक्ष्मी देवी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री तुलसी के ७९वें दीक्षा दिवस पर विशेष

● मुनि कमल कुमार ●

संसार में अनेक प्राणी जन्म लेते हैं। परंतु कलात्मक जीवन जीने वाले विरले ही व्यक्ति होते हैं। आचार्यश्री तुलसी जिनका जन्म राजस्थान प्रांत में नागौर जिले के लाडनूं शहर में ओसवाल समाज के धर्मनिष्ठ खटेड़ परिवार में पिता झूमरमलजी, माता वदनाजी के घर हुआ। आप बाल्यकाल से ही प्रतिभावान थे। आपकी मुखाकृति सबको आकृष्ट करने वाली थी। बचपन से ही माता-पिता ने आपको धर्म-ध्यान में लगा दिया। लाडनूं में निरंतर चारित्रात्माओं का प्रवास होने से प्रतिदिन दर्शन सेवा करने से आपमें वैराग्य का जागरण हो गया। और विक्रम संवत् १९८२ अर्थात् पौषकृष्णा पंचमी को तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी के करकमलों से भाई-बहन दोनों ने एक साथ जैन भगवती दीक्षा ग्रहण की।

दीक्षा के पश्चात आपने साधुचर्या का सम्यक् पालन करते हुए अध्ययन का क्रम प्रारंभ कर दिया और १६ वर्ष की अवस्था में आप एक कुशल अध्यापक बनकर संतों को अध्यापन कराने लग गए। आपकी अध्ययन अध्यापन की शैली से पूज्य गुरुदेव कालूगणी पूर्ण प्रसन्न थे। मात्र २२ वर्ष की अवस्था में आपको अपना उत्तराधिकारी बना दिया। हमें पूज्य कालूगणी की पैनी-दृष्टि एवं साहसी निर्णय पर नाज होता है कि इतने विशाल धर्मसंघ का दायित्व एक २२ वर्षीय युवा संत को सौंप दिया। मात्र तीन दिन के बाद ही कालूगणी का स्वर्गवास हो गया, परंतु आचार्यश्री तुलसी ने जिस तरह से धर्मसंघ को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया उसे युग ही नहीं शताब्दियों तक स्मरण किया जाएगा।

जब देश स्वतंत्र हुआ तब आपने स्वस्थ व्यक्ति निर्माण की दृष्टि से एक आंदोलन चलाया था जो अणुव्रत के नाम से विश्वविख्यात हुआ। देश के मूर्धन्य विद्वान्, राजनेता, उद्योगपति, पत्रकार, धर्माधिकारियों का आपको पूरा सहयोग मिला। सभी ने अणुव्रत को असंप्रदायिक धर्म बताकर सहर्ष स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि आप किसी भी पंथ, ग्रंथ या संत को मानें परंतु नैतिक और निर्व्यसनी बनें, जिससे परिवार, समाज, देश और स्वस्थ विश्व का निर्माण हो सकता है। आपका मानना था कि व्यक्ति सुधार से ही विश्व सुधार हो सकता है। क्योंकि व्यक्ति से ही परिवार, समाज, देश और विश्व की उन्नति संभव है। आपने पंजाब से कन्याकुमारी, कोलकाता से राजस्थान तक की पैदल यात्राएँ करके इसका प्रचार-प्रसार किया। आपके यशस्वी उत्तराधिकारी आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने भी इसे खूब आगे बढ़ाया और वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण जी भी देश-विदेश की विस्तृत यात्राएँ करके सतत सबका मार्गदर्शन कर रहे हैं।

मंगलभावना समारोह एवं दीक्षार्थी का अभिनंदन समारोह

चेन्नई।

माधावरम्, तेरापंथ सभा, चेन्नई के तत्त्वावधान में संपूर्ण चेन्नई समाज की ओर से साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के मंगलमय चातुर्मास की संपन्नता पर मंगलभावना समारोह एवं मुमुक्षु सोनल पीपाड़ा का अभिनंदन समारोह का आयोजन आचार्य महाश्रमण तेरापंथ जैन पब्लिक स्कूल के प्रांगण में किया गया।

इस अवसर पर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि धर्म के चार द्वारों में प्रवेश करना साधक की साधना के लिए महत्त्वपूर्ण है। क्षमा यानी शांत सरोवर की तरह जीवन को बना लिया जाए। साधना का मार्ग कभी लक्ष्य हीन नहीं हो सकता। लक्ष्य के साथ संकल्प को साधें। आज सोनल विजय यात्रा, संयम यात्रा के लिए प्रस्थित हो रही है। जो मार्ग इसने अपनाया है वह सामान्य नहीं है। यह संघ के संवर्धन में योगभूत बन रही है। संगायिका सोनल आत्म संगीत गाने हेतु संकल्पबद्ध होकर प्रस्थान कर रही है। चढ़ते भावों के साथ विकास के पथ पर, संयम के पथ पर आरोहण करती रहना।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभा अध्यक्ष उगमराज सांड ने स्वागत स्वर प्रस्तुति के साथ साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। माधावरम् ट्रस्ट कोषाध्यक्ष गौतम समदड़िया, स्कूल चेयरमैन तनसुख नाहर, महिला मंडल उपाध्यक्षा अल खटेड़, तेयुप अध्यक्ष विकास कोठारी सहित अनेक सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

दीक्षार्थी मुमुक्षु सोनल के मामाजी महावीर बाफना ने दीक्षार्थी का परिचय प्रस्तुत किया। बाफना परिवार की बहनों ने बधाई गीत प्रस्तुत किया। तेममं ने मंगल गीत की प्रस्तुति दी। जय तुलसी मंडल एवं तेयुप ने अपने गीतों से परिषद में समा बाँध दिया। गौतम बाफना ने उद्गार व्यक्त किए।

साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने कहा कि संयम यात्रा में मुस्कान अक्षुण्ण बनी रहे। वैराग्य भाव पर से संयम-पथ पर आगे बढ़ती रहे, मार्ग में कहीं अवरोध न आए।

सोनल ने कहा कि ज्ञानशाला में बचपन में मैंने सीखा है सजग जीवन शैली। मुझे अध्यात्म की पूँजी दादा से मिली। मुझे आज मंगलमयी मामा से मंगल आशीर्वाद मिला, यह मेरे संयम जीवन का महत्त्वपूर्ण उपहार है। साथ कन्या मंउल ने मंगल माला, मंगल तिलक के साथ मुमुक्षु की मंगल आरती की मोहक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का मंच संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री अशोक खतंग ने किया। आभार ज्ञापन तेरापंथ सभा सहमंत्री देवीलाल हिरण ने किया।

जय जय ज्योति चरण — जय जय महाश्रमण

मर्यादोत्सव की घोषणा से,
बनी भाग्यवती भुज धरा

पूज्यप्रवर के पदार्पण से
कच्छ हो जाएगा हरा भरा

हम सब आपके आभारी हैं।
कृतज्ञोस्मि

दिनांक 24 नवम्बर 2022 को आचार्यश्री भिक्षु चार्तुमास स्थली पादूकलां में मानवता के महान पुजारी शांतिदूत परम श्रद्धेय युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के मुखारविंद से **सन् 2025 का मर्यादा-महोत्सव भुज** में करने की घोषणा पर सम्पूर्ण कच्छ समाज हर्ष और सौभाग्य की अनुभूति कर रहा है।

पूज्यप्रवर की इस महान उदारता के प्रति सम्पूर्ण कच्छ समाज के साथ विशेषतः भुज समाज नमन करता हुआ परम पूज्य श्रद्धेय आचार्य प्रवर के इस महान अनुग्रह के प्रति हृदय की अनंत गहराइयों से कृतज्ञता ज्ञापित करता है। संभवतः गुजरात का यह पहला मर्यादा महोत्सव होगा, जिसका सौभाग्य भुज-कच्छ को प्राप्त होगा।

: श्रद्धाप्रणत :

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा – भुज
तेरापंथ महिला मंडल –भुज
तेरापंथ युवक परिषद् –भुज
अणुव्रत समिति –भुज

✦ *जिस संगठन में पारस्परिक व्यवहार मृदुता व हितैषितापूर्ण होता है, वह दीर्घजीवी बन जाता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

संस्कारों से बच्चों में सुंदर भविष्य का निर्माण

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार निर्माण कार्यशाला के अंतर्गत 'उम्मीद एक बेहतर कल की' वर्कशॉप का प्रथम चरण तेममं द्वारा राजकीय उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय इंदिरा गांधी नगर, बालोतरा में किया गया। मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि इस कार्यक्रम में लगभग १६० बच्चे उपस्थित हुए। सर्वप्रथम महाप्राण ध्वनि का प्रयोग नौ बार कन्या मंडल संयोजिका साक्षी वैद मेहता द्वारा करवाया गया।

महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला संकलेचा ने हर बच्चे को बुजुर्गों की सेवा करने की प्रेरणा दी। अच्छे संस्कारों से बच्चों के सुंदर भविष्य का निर्माण किया जा सकता है।

अभातेममं सदस्य व मारवाड क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा ने मौलिक विचार व्यक्त किए तथा बच्चों के अनुशासन, विनम्रता, गंभीरता की प्रशंसा की। उर्मिला सालेचा ने एक कहानी के माध्यम से माता-पिता की आज्ञा का पालन करने की प्रेरणा दी। उपाध्यक्ष व पार्षद चंद्रा बालड़ ने महात्मा गांधी के बारे में बच्चों को समझाया एवं प्रश्नोत्तर भी पूछे। रानी बाफना ने बच्चों को अनुप्रेक्षा करवाई। पूर्व परामर्शक कमला देवी ओस्तवाल ने बच्चों को सामान्य जानकारी प्रदान करवाई।

विद्यालय के प्रिंसिपल समयसिंह गुर्जर ने अभातेममं के इस कार्यक्रम की प्रशंसा की। सभी बच्चों को बिस्किट महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा की तरफ से वितरित किए गए एवं प्रश्न-उत्तर के जवाब देने वाले सभी बच्चों को भी सम्मानित किया गया। सहमंत्री इंदु भंसाली ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री संगीत बोथरा ने किया। कार्यक्रम में निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल, सहमंत्री रेखा बालड़ भी उपस्थित थे।

एक कदम जीवन निर्माण की दिशा में

भीलवाड़ा।

अभातेममं के निर्देशन में समृद्ध राष्ट्रीय योजना के अंतर्गत Aid to Assisting Hands निर्माण परियोजना जिसके अंतर्गत प्रोजेक्ट होम हेल्पर्स कार्यशाला, तेममं द्वारा साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में आयोजित हुई। नवकार मंत्र उच्चारण के साथ कार्यशाला का शुभारंभ हुआ।

साध्वी डॉ० परमयशा जी ने कहा कि आज जो आदर सम्मान आपको अग्रिम पंक्ति में बैठाकर मंडल ने दिया वो शायद ही आपको कहीं मिलेगा। इसलिए आप भी इन बहनों का सहयोग करते हुए एक-दूसरे के पूरक बनें। होम हेल्पर्स के प्रति मंगलकामना करते हुए साध्वीश्रीजी ने आशीर्वाद प्रदान किया।

महिला मंडल अध्यक्षा मीना बाबेल ने होम हेल्पर्स एवं कार्यक्रम में उपस्थित श्रावक समाज का स्वागत करते हुए कहा कि महिला मंडल द्वारा इन बहनों को सम्मान करके अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। राष्ट्रीय सहमंत्री नीतू ओस्तवाल ने बहनों को मोटिवेट किया। चीफ गेस्ट मंजु पोखरना ने कार्यशाला में होम हेल्पर्स को जीवन व्यवहार से संबंधित एवं राजस्थान सरकार की ओर से उपयोगी लाभकारी योजनाओं से अवगत कराया, जिनको अपनाकर वो अधिक सफल हो सकती हैं।

स्पेशल गेस्ट अनिल बोडाना ने जीवन बीमा के बारे में अच्छी जानकारी प्रदान की। प्रतीक जैन ने बैंकिंग की जानकारी दी। डॉ० अर्पणा सामसुखा ने बहनों को कहा कि वो कभी कोशिश करना न छोड़ें। समय के साथ कुछ न कुछ नया सीखते हुए अपनी आय को बढ़ाएँ। डॉ० कमलेश चोरड़िया ने स्वास्थ्य संबंधी प्रशिक्षण दिया। कार्यशाला में होम हेल्पर्स बहनों को गिफ्ट प्रायोजक अंजना-उत्तम रांका की तरफ से प्रदान किए गए।

कार्यक्रम का संचालन प्रेक्षा मेहता, विनीता सुतरिया एवं आंचल दक द्वारा किया गया। होम हेल्पर्स के लिए कंपीटीशन गेम भी आयोजित किए गए। कार्यक्रम में तेममं की ओर से आभार ज्ञापन नीलम लोढ़ा ने किया।

कार्यशाला में लगभग ७५ होम हेल्पर्स संभागी बने। नवरतन मल लक्ष्मी लाल झाबक की तरफ से सभी होम हेल्पर्स को चाय के पैकेट वितरित किए गए।

बाहर से पधारे सभी अतिथियों एवं कार्यशाला प्रायोजक का उपरना एवं साहित्य द्वारा सम्मान संस्था के पदाधिकारियों द्वारा किया गया। कार्यशाला में प्रमिला गोखरू, विजया सुराणा, पुष्पा पामेचा, विनीता हिरण, टीना मेहता, आशा भलावत, सांवर शर्मा एवं अन्य सभी सक्रिय बहनों का सहयोग रहा।

'द पॉवर ऑफ पॉजिटिव' विषय पर कार्यशाला

हासन।

अभातेममं के निर्देशन में हासन सभा भवन में 'द पॉवर ऑफ पॉजिटिव' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रेरणा गीत से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। अध्यक्षीय भाषण संगीता कोठारी ने दिया। पधारी हुई बहनों का स्वागत करते हुए सकारात्मक सोच के लिए ५ सूत्र बताए। हैप्पी लाइफ विथ पॉजिटी एटीट्यूड, अच्छा सोचें, नजरिया बदलें, शिकायत मत करो। परेशानी पर फोकस मत करो, मोटिवेट करो।

सूरज तातेड़ ने सकारात्मक सोच का अर्थ सकारात्मक दृष्टि के साथ जीवन की चुनौतियों का सामना करना बताया। मंत्री वनीता सुराणा ने नारी लोग का वाचन किया।

दूसरे चरण में उत्सव रिश्तों का, प्रेम देवरानी-जेठानी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विनीता सुराणा, जयंती सुराणा और ललिता सुराणा ने लघु नाटिका की प्रस्तुति दी। संगीता आर कोठारी और संगीता एस कोठारी ने सुंदर कविता की प्रस्तुति दी। सूरज तातेड़ और उमा तातेड़ ने हास्य नाटिका से अपनी प्रस्तुति दी।

ममता कोठारी, पूजा कोठारी, निकिता कोठारी, नम्रता सुराणा, सपना सुराणा तृप्ति भंसाली, मीनल भंसाली ने कविता के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी।

रीटा तातेड़ और प्रेक्षा तातेड़ ने सभी देवरानी-जेठानी जोड़ी को गेम्स खिलाए। अभातेममं के निर्देशानुसार हासन में सात बहनों ने पूरे दिन २४ घंटे का मौन रखा। आभार ज्ञापन उमा तातेड़ ने किया।

पर्वत पाटिया।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा 'द पॉवर ऑफ पॉजिटिव' कार्यशाला का आयोजन साध्वी सम्यक्प्रभा जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र के द्वारा किया। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत के द्वारा मंगलाचरण किया।

महिला मंडल अध्यक्ष ललिता पारख ने सभी बहनों का स्वागत करते हुए सकारात्मक सोच के विषय में बताया। निवर्तमान अध्यक्ष कुसुम बोथरा ने सकारात्मक सोच विषय पर वक्तव्य प्रस्तुत किया। उदाहरणों के द्वारा समझाया।

साध्वी मलयप्रभा जी ने प्रशिक्षण देते हुए बताया कि सकारात्मक विचारों की कितनी बड़ी ताकत होती है। साध्वी सम्यक्प्रभा जी ने विशेष प्रेरणा पाथेय प्रदान किया और कहा कि परिवार में सकारात्मक सोच, सहनशीलता एवं धैर्य से घर को स्वर्ग बनाया जा सकता है।

कार्यक्रम का संचालन सुनीता पारख ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री चेष्टा कदमालिया ने किया। कार्यक्रम में बहनों की अच्छी उपस्थिति रही। साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं साध्वीश्री जी के मंगलपाठ से कार्यक्रम का समापन हुआ।

तेलंगाना स्तरीय कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में, तेरापंथ भवन में आंध्रा तेलंगाना स्तरीय कार्यशाला 'क्षितिज' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम तीन सत्र में आयोजित किया गया। शुभारंभ स्थानीय महिला मंडल द्वारा गीत की प्रस्तुति से हुआ। अध्यक्षा अनिता गिड़िया ने सभी का स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। सभा अध्यक्ष बाबूलाल बैद ने कार्यशाला के प्रति शुभकामनाएँ प्रेषित की।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी द्वारा प्राप्त संदेश का वाचन आंध्रा तेलंगाना सहप्रभारी वंदना ने किया। नवयुवती मंडल व कन्या मंडल की प्रस्तुति हुई। अभातेममं सहमंत्री नीतू ओस्तवाल, प्रचार-प्रसार मंत्री सरिता बरलोटा ने बताया कि स्वभाव का प्रभाव दैनिक जीवन पर कैसे पड़ता है।

राष्ट्रीय अध्यक्षा अभातेममं, नीलम सेठिया ने 'क्षितिज' और 'स्वभाव का प्रभाव' इन दोनों विषयों को छूते हुए बताया कि क्षितिज का अर्थ होता है जहाँ आकाश और धरती का मिलन होता है। हकीकत में देखा जाए तो धरती और आकाश का मिलन कभी होता ही नहीं है। यह केवल आभास मात्र है। कभी हम समुद्र के पास खड़े होते हैं तब हमें लगता है पानी और आकाश का मिलन हो रहा है। दूर से लगता है वहाँ धरती और आकाश का मिलन हो रहा है।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि व्यक्ति आसमां को छूना चाहता है। अपने सपनों को सच में बदलना चाहता है। विकास की रफ्तार को गति देने के लिए जरूरी है, सबसे पहले हम अपने लक्ष्य का निर्धारण करें।

मुख्य वक्ता मनी पवित्रा ने बहनों को आर्थिक क्षेत्र में कैसे मैनेजमेंट किया जाए, बताया। तीसरे सत्र में कन्या मंडल की कार्यशाला का आयोजन राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा किया गया।

आभार ज्ञापन मंत्री श्वेता सेठिया ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कल्पयशा जी ने किया। कार्यक्रम में सभी संयोजिकाओं का सहयोग रहा।

कार्यक्रम में संरक्षिका सुशीला संचेती, विमलेश सिंघी, संपत सिंघी, परामर्शक चंद्रा सुराणा, अर्पिता लोढ़ा, सरोज भंडारी, चंदा जैन आदि का मार्गदर्शन रहा। आंध्रा, तेलंगाना, भिलाई क्षेत्रों से बहनों की सहभागिता रही।

कार्यक्रम में नगरत्रय के गणमान्य व्यक्ति एवं सभी संस्थाओं के पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

उत्सव रिश्तों का, प्रेम देवरानी-जेठानी का कार्यशाला

पर्वत पाटिया।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं द्वारा 'उत्सव रिश्तों का, प्रेम देवरानी-जेठानी का' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम पर्वत पाटिया भवन में अध्यक्ष ललिता पारख की अध्यक्षता में आयोजित की गई। कार्यक्रम की शुरुआत संरक्षिका सरला ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ की। महिला मंडल की बहनों के द्वारा प्रेरणा गीत की प्रस्तुति दी गई।

कार्यक्रम में देवरानी-जेठानी की कुल नौ जोड़ियों का तिलक लगाकर व जैन प्रतीक से सम्मान करके मंचासीन कराया गया। अध्यक्ष ललिता पारख ने सभी का स्वागत किया।

मुख्य वक्ता सीपीएस ट्रेनर चेतना सिंघवी ने अनेक उदाहरण व कहानी के माध्यम से देवरानी-जेठानी के रिश्तों के बारे में बताया। एक लघु नाटक के द्वारा प्रस्तुति दी। साथ ही गेम भी खिलाए। जजमेंट उपाध्यक्ष रंजना कोठारी, कोषाध्यक्ष अंजु धाकड़, उपासिका मधु झाबक ने किया।

जिसमें प्रथम महिमा डागा, शिल्पा डागा, द्वितीय करुणा रांका, मनीषा रांका व तृतीय स्थान प्रिया पुगलिया, रेखा पुगलिया ने प्राप्त किया। इन सभी जोड़ियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता में भाग लेने वाली सभी जोड़ियों को सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम संयोजक तारा बैद व मधु सिंघी का कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष योगदान रहा। लगभग ४६ बहनों की उपस्थिति रही।

संचालन सुनिता पारख ने किया।

आभार ज्ञापन मंत्री चेष्टा जैन ने किया।

✦ *पुण्य का उदय काल अच्छा लगता है। उसमें अनुकूलता प्राप्त होती है। किंतु पुण्यवान् व्यक्ति के लिए ध्यातव्य है कि उसका पुण्य आगामी पाप का निमित्त न बने, यानी पुण्योदय काल में संयम रहे।*

✦ *माया, कपट अविश्वास का कारण है। जहाँ सरलता है, उस व्यक्ति का विश्वास किया जा सकता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

संत मिलन का अद्भुत नजारा

बेलपाडा।

टिटलागढ़ का चातुर्मास संपन्न कर मुनि रमेश कुमार जी, कांटाबाजी चातुर्मास संपन्न कर मुनि प्रशांत कुमार जी का अद्भुत आध्यात्मिक मिलन बेलपाडा की धरा पर हुआ। मुनि रमेश कुमार जी ने कहा कि दो संतों का मिलन सदैव सुखदायी होता है। संतों के पास जाएँ तो माया अभिमान को छोड़कर जाएँ। त्यागी, तपस्वी संतों के पास जाने से पहले अपने कषायों को छोड़कर जाएँ तो जीवन में आनंद आता है। संत की शिक्षा जीवंत सीख है। जीवन का कल्याण करने के लिए संत चातुर्मास करते हैं। आत्मकल्याण के साथ पर-कल्याण करना उनका उद्देश्य होता है।

मुनि प्रशांत कुमार जी सक्षम संत हैं, धर्मसंघ के प्रभावशाली संत हैं, जैसा नाम वैसा गुण है। मुनि कुमुद कुमार जी कर्मठ संत हैं। मुनि कुमुद कुमार जी जैसे सहवर्ती संतों का साथ अग्रणी का सौभाग्य है। मुनिगण ने कांटाबाजी को सजाया-सँवारा, सिंचन दिया है। ये उर्वरा क्षेत्र है। टिटलागढ़ का चातुर्मास संपूर्ण समाज के सहयोग की निष्पत्ति है। पश्चिम उड़ीसा श्रद्धा, भक्ति, सेवा, समर्पण का क्षेत्र है।

मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि आचार्यप्रवर की छत्रछाया हमारे जीवन को सरसब्ज बना देती है। संतों का जब मिलन होता है तो संत भीतर से मिलन करते हैं, मन से मिलते हैं। यह मिलन आपके लिए प्रेरणादायी बने। सभी अपने परिवार में प्रेम, सौहार्द से रहें, भीतर से आनंदमय रहें। अध्यात्म हमें भीतर की खुशी देता है। मुनि रमेश कुमार जी, मुनि रत्न कुमार जी दोनों संत परिश्रमी, लंबी यात्रा करने वाले साधक हैं। दोनों ने श्रावक समाज को जागृत किया है। आपका उपकार टिटलागढ़वासी कभी भूल नहीं पाएँगे।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं कि ऐसा मर्यादित, अनुशासित, संगठित धर्मसंघ मिला। जिस संघ में रहकर आत्मिक आराधना, साधना कर रहे हैं। साधु-साध्वी की प्रमोद भावना एक-दूसरे के प्रति सौहार्द भाव अनुकरणीय है। मुनि रत्न कुमार जी ने कहा कि टिटलागढ़ में नित नए कार्यक्रम चले। संतों के मिलन से हर्ष होता है। टिटलागढ़ का श्रावक समुदाय ने मुनिश्री की इंगित आराधना की है। सभा, तेयुप, महिला मंडल, किशोर मंडल ने चातुर्मास को सफल बनाने में योगदान दिया।

मीडिया प्रभारी अविनाश जैन ने कांटाबाजी एवं टिटलागढ़ के चातुर्मास संपन्नता की पूरी जानकारी दी। कार्यक्रम का शुभारंभ बेलपाडा महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। शंकर जैन ने स्वागत वक्तव्य, सभा अध्यक्ष पृथ्वीराज जैन, कांटाबाजी सभा अध्यक्ष युवराज जैन, कन्या मंडल बेलपाडा, महासभा आंचलिक प्रभारी छत्रपाल जैन आदि अनेक पदाधिकारीगण ने अपने विचार व्यक्त किए। बेलपाडा ज्ञानशाला ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। कांटाबाजी तेयुप अध्यक्ष अंकित जैन के जैन संस्कारक बनने पर तेरापंथ सभा, तेयुप एवं शाखा प्रभारी गौतम जैन ने साहित्य, मोमेंटो एवं अंग वस्त्र से सम्मानित किया। आभार ज्ञापन गौतम जैन ने किया। कार्यक्रम का संचालन विकास जैन ने किया।

संतों का आध्यात्मिक मिलन

राजनगर।

शासनश्री मुनि रविंद्र कुमार जी एवं मुनि अतुल कुमार जी का मुनि विनोद कुमार जी, मुनि यशवंत कुमार जी एवं मुनि प्रतीक कुमार जी के साथ आध्यात्मिक मिलन हुआ। भिक्षु बोधि स्थल और तेयुप, राजसमंद के द्वारा इस आध्यात्मिक मिलन समारोह का आयोजन किया गया। तेयुप के मंत्री अंकित परमार ने बताया कि इस समारोह में मुनि अतुल कुमार जी ने कहा कि समय सदा एक जैसा नहीं रहता। समय के साथ परिस्थितियाँ बदलती हैं और फिर उनके समाधान खोजने पड़ते हैं। विकास क्रम में ऐसे बदलाव अनायास ही प्रस्तुत कर दिए गए हैं। इस परिवर्तन क्रम को रोका नहीं जा सकता।

मनुष्य प्रगतिशील रहा है और रहेगा। वह सृष्टि के आदि से लेकर अनेक परिवर्तनों के बीच से गुजरता हुआ आज की स्थिति तक पहुँचा है। यह क्रम आगे भी चलता ही रहने वाला है। डॉ० मुनि विनोद कुमार जी एवं मुनि यशवंत कुमार जी ने प्रमोद भावना व्यक्त करते हुए संतों के गुणों की विस्तृत व्याख्या की। मिलन समारोह में भिक्षु बोधि स्थल के कार्यवाहक अध्यक्ष हर्षलाल नवलखा, चतुरलाल कोठारी, भूपेश धोका, यशवंत चपलोत सहित अनेक गणमान्य श्रावक-श्राविका ने अपने विचार व्यक्त किए। मुनि रविंद्र कुमार जी ने मंगलपाठ सुनाया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री मंजु बड़ोला ने किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✳ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

विवाह संस्कार

काठमांडू।

काठमांडू निवासी तेरापंथी सभा के पूर्व अध्यक्ष सुशील जैन छाजेड़ की सुपुत्री पूजा जैन का शुभ विवाह विले पार्ले, मुंबई निवासी योगेश मेहता के सुपुत्र मिहिर मेहता के साथ जैन संस्कार विधि द्वारा संपन्न हुआ।

जैन संस्कारक राकेश आच्छा, कमलेश दुग्गल, दिनेश चोरड़िया और विमल गादिया ने पूर्ण विधि-विधान से विवाह संस्कार संपन्न करवाया।

तेयुप, मुंबई के अध्यक्ष अविनाश गोगड़ ने दोनों परिवारों को बधाई प्रेषित की।

नूतन गृह प्रवेश

दिल्ली।

निशा सिंह दिल्ली प्रवासी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन गिड़िया, मनीष बरमेचा ने संपूर्ण विधि-विधान व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

संस्कारक मनीष बरमेचा ने शुभकामनाएँ देते हुए संस्कारकों की तरफ से आभार ज्ञापन किया। तेयुप, दिल्ली की तरफ से परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नामकरण संस्कार

विजयनगर।

गंगाशहर निवासी, बैंगलोर प्रवासी मोहित एवं सोनाली की सुपुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक श्रेयांस गोलछा ने मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

परिषद की ओर से गुलगुलिया परिवार को मंगलभावना पत्रक एवं नामकरण पत्रक भेंट किया गया।

इस अवसर पर साथी संस्कारक राकेश पोखरना ने गुलगुलिया परिवार एवं नवजात के प्रति मंगलकामना प्रेषित की। तेयुप, विजयनगर का आभार व्यक्त किया। परिषद सहमंत्री संजय भटेवरा ने गुलगुलिया परिवार का आभार व्यक्त किया।

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी हेमंत-लीला बोथरा के नवजात पुत्री रत्न का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ।

जैन संस्कारक पवन छाजेड़, पीयूष लुणिया, विनीत बोथरा और देवेंद्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार सहित जैन संस्कर विधि से नामकरण संपन्न करवाया।

बोथरा परिवार की तरफ से राजेंद्र आंचलिया ने संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया।

जयपुर।

मिन्नी कुमारी-गौरव राखेचा की सुपुत्री का नामकरण संस्कार संस्कारक श्रेयांस बैंगानी ने विधि-विधानपूर्वक मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

तेयुप अध्यक्ष सुरेंद्र नाहटा व जैन संस्कार विधि के संयोजक कुलदीप बैद सहित समाज के अन्य गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति रही। परिषद परिवार की ओर से मंगलभावना पत्रक स्थापित करवाया गया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

अमराईवाड़ी-ओढव।

बालचंद चपलोत के सुपुत्र हितेश चपलोत, अशोक सिंघवी के सुपुत्र जयेश सिंघवी के नए प्रतिष्ठान का जैन संस्कार विधि से संस्कारक पंकज डांगी, दिनेश टूकलिया और विकास डांगी ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा संपन्न करवाया।

अमराईवाडी सभा सदस्य अशोक सिंघवी ने संस्कारकों का धन्यवाद किया।

तेयुप की तरफ से हितेष और जयेश को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
12 - 18 दिसंबर, 2022

✦ *जो व्यक्ति घटना के साथ खुद को जोड़ देता है वह दुःखी बन जाता है और जो केवल द्रष्टाभाव से घटना को देखता है वह दुःख-मुक्त रह सकता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

गजसुकुमाल एवं संस्कार नाटक का आयोजन

कांटाबाजी।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में मुनि कुमुद कुमार जी की प्रेरणा, निर्देशन, मार्गदर्शन से तेयुप एवं कन्या मंडल द्वारा गजसुकुमाल एवं संस्कार नाटिका का आयोजन हुआ। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि संस्कार एवं गजसुकुमाल परिसंवाद की प्रस्तुति हुई। संस्कारों की आज के समय में नितांत आवश्यकता है। संस्कारों के बिना प्राप्त ज्ञान भार बन जाता है।

जीवन जीना बड़ी बात नहीं अपितु चित्त समाधिमय जीवन जीना ही जीवन की सार्थकता है। धार्मिक संस्कार जीवन को सही रास्ते पर चलाना सिखाते हैं। नम्रता, शालीनता एवं शिष्टता के संस्कार परिवार का गौरव है।

गजसुकुमाल का नाटक बहुत ही प्रेरक है। श्रीकृष्ण के आध्यात्मिक जीवन से बहुत प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है। श्रीकृष्ण ने कितने-कितने लोगों को आत्मकल्याण के लिए प्रेरित किया। गजसुकुमाल ने दीक्षा ली भयंकर कष्ट को सहन किया। समभाव, समता, कर्मनिर्जरा का उत्कृष्ट उदहारण है। संयम जीवन की प्राप्ति हो ये मनोरथ हर श्रावक के मन में रहना चाहिए।

मुनि कुमुद कुमार जी ने प्रेरणा देकर रोचक प्रस्तुति तेयुप एवं कन्या मंडल द्वारा करवाई। मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि तेयुप द्वारा आयोजित नाटक को तेयुप एवं कन्या मंडल ने प्रस्तुत कर जीवंत संदेश दिया है।

गजसुकुमाल की जीवन कहानी है। तेयुप एवं कन्या मंडल ने अथक् जागरूकता से भव्य प्रस्तुति दी। सभी साधुवाद के पात्र हैं। मीडिया प्रभारी अविनाश जैन ने बताया कि तेयुप द्वारा आयोजित गजसुकुमाल एवं संस्कारक नाटक को तेयुप के सदस्यों एवं कन्या मंडल की सदस्यों ने भव्य, शालीन एवं रोचक प्रस्तुति दी। विकास जैन ने गजसुकुमाल एवं पूजा जैन ने संस्कारक नाटक का संचालन किया। प्रायोजक गौतम बेलपाडा एवं विकास जैन का मोमेंटो द्वारा सम्मान किया गया। गजसुकुमाल एवं संस्कारक नाटक के पात्रों को प्रायोजक परिवार द्वारा सम्मानित किया गया। सुमित जैन ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में उत्केला, सिंधिकेला, बेलपाडा एवं बगुमुंडा से श्रावक समाज उपस्थित रहा।

भाषण प्रतियोगिता एवं मंगल विहार

भीलवाड़ा।

साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में रात्रि को निर्मल गोखरू के निवास पर तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में 'रिश्तों में माधुर्य' पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। नवकार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

साध्वी परमयशा जी ने कहा कि रिश्तों की मजबूती के लिए जरूरी है आपसी प्रेम, विश्वास और सरसता। जब व्यक्ति जन्म लेता है तो उसके साथ अनेक रिश्ते जुड़ जाते हैं। हर रिश्ता अनोखा होता है। ये व्यक्ति की समझ, व्यवहार व नजरिए पर निर्भर करता है। साध्वीश्री ने उपस्थित श्रावक समाज को आध्यात्मिक संकल्प ग्रहण करवाए।

भाषण प्रतियोगिता में विजयी प्रतियोगी को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी, साध्वी कुमुदप्रभा जी ने भी रिश्तों में माधुर्य पर अपने विचार रखे। इस प्रतियोगिता के प्रायोजक निर्मला गोखरू रहे।

सभी प्रतिभागियों को प्रायोजक परिवार एवं संस्था पदाधिकारियों द्वारा सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मनाली चोरड़िया ने किया। कार्यक्रम में श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही। तेमम की ओर से सभी के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

साध्वी डॉ० परमयशा जी गोखरू निवास से विहार करके जयाचार्य भवन आर०सी० व्यास कॉलोनी पधारे। जहाँ पर तपस्वी मुनि पारस कुमार जी एवं मुनि शांतिप्रिय जी विराज रहे हैं। आपने संतों की कुशलक्षेम की पृच्छा की। साध्वीवृंद एवं मुनिद्वय के आध्यात्मिक मिलन पर श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

अणुव्रत-प्रेक्षाध्यान से जीवन निर्माण

सिकंदराबाद।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी की प्रेरणा से श्रद्धा की प्रतिमूर्ति, अणुव्रत सेवी निर्मला बैद ने गनर्वमेंट गर्ल्स कॉलेज में अणुव्रत प्रेक्षाध्यान का कार्यक्रम किया। मंगलाचरण से कार्यक्रम शुरू हुआ। निर्मला ने बताया कि आज शिक्षा डिग्री के लिए दी जाती है, वह भी जरूरी है। लेकिन इसके साथ इमोशनल डेवलपमेंट के बारे में बताकर प्रयोग करवाने चाहिए इससे जीवन का चहुँमुखी विकास होता है और अच्छे जीवन व चरित्र का निर्माण होता है।

अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान जिसकी कल्पना है संतुलित विकास। कोरी डिग्री हो और भावनात्मक विकास न हो तो चेतना जागृत नहीं होती और वह हितकर नहीं होती। चारों तरफ के विकास से मानसिक शांति बनी रहती है। इससे सहनशीलता, सम्यक् दृष्टिकोण का विकास होता है। स्मरण शक्ति बढ़ती है।

एक लड़की दो घरों को सँवारती है, जब वह यहाँ से परिवार से अच्छे संस्कारों को लेकर जाती है तो ससुराल को भी स्वर्ग बना सकती है।

नशा नाश का द्वारा है आज लड़कियाँ भी नशा करने लगी हैं। उससे कितने नुकसान हैं, जानकारी दी। इसके लिए कई प्रयोग बताए व करवाए।

नैतिकता, नशामुक्ति, सद्भावना आचार्यश्री महाश्रमण जी की यात्रा के पहलू हैं। जीवन निर्माण के लिए प्रयोग भी जरूरी है। मन की एकाग्रता, क्रोध कम करने, नशे से दूर, हिंसा, मार-धाड़ न हो। इसके लिए कई प्रयोग बताए गए।

लगभग ४०० विद्यार्थियों ने भाग लिया व ध्यानपूर्वक सुना। प्रिंसिपल ने आभार ज्ञापित किया व धन्यवाद दिया। हनुमान बैद साथ में थे। कुछ सामग्री हनुमान जितेंद्र की तरफ से दी गई।

परदेसी राजा का व्याख्यान एवं मंगल विहार

वाशी।

साध्वी पंकजश्री जी का अणुव्रत सभागार, वाशी से मंगल विहार अशोक आच्छा के निवास स्थान पर हुआ। मंगलमय, सुखमय चातुर्मास पवन प्रवास संपन्न कर साध्वीश्री आचार्यप्रवर की आज्ञा से नवी मुंबई व मुंबई के आसपास के क्षेत्र मे विचरण करेंगी। विहार के पूर्व परदेसी राजा का प्रवचन हुआ। साध्वी पंकजश्री जी ने सभी के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामनाएँ व्यक्त की। साध्वी ललिताश्री जी, साध्वी शारदाप्रभा जी, साध्वी सम्यक्तयशा जी ने भी मंगलकामना व्यक्त की।

साध्वीश्री जी ने वाशी, नवी मुंबई श्रावक समाज की श्रद्धा भक्ति की सराहना करते हुए कहा कि संघ की हर संस्था ने आध्यात्मिक गतिविधियों से जुड़कर कर्म निर्जरा का अच्छा लाभ लिया।

मंगल बेला में हुए इस विहार में समाज के सभी वर्गवेत्ता तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल के सदस्यों की उपस्थिति रही।

कल्याणकारी कल्याण मंदिर अनुष्ठान

गंगाशहर।

तेरापंथ भवन का प्रांगण, चारों ओर गूँजते मंगल मंत्रों की ध्वनि और श्वेत-केसरिया परिधान में तल्लीनता से जाप करते हुए श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाएँ वातावरण में दिव्यता की अनुभूति कर रहे थे। यह मौका था कल्याणकारी कल्याण मंदिर अनुष्ठान का। मुनि शांति कुमार जी एवं मुनि जितेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में लगभग १२१ से भी अधिक जोड़ों ने प्राचीन ॐ की वृहद आकृति में भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति कल्याण मंदिर स्तोत्र का सामूहिक रूप में अनुष्ठान किया। यह कार्यक्रम तेयुप, गंगाशहर द्वारा आयोजित किया गया।

मुनि जितेंद्र कुमार जी ने कहा कि भगवान श्री पार्श्वनाथ जैन धर्म के २३वें तीर्थंकर हुए। उन्हें पुरुषादानीय की उपमा से उपमित किया गया। प्रभु पार्श्वनाथ की स्तवना में यह कल्याण मंदिर स्तोत्र अति प्राचीन स्तोत्र है। मंत्रों में विशिष्ट शक्ति होती है और जब सामूहिक एवं विशेष आकार में अनुष्ठान होता है तो उसका पूरे वातावरण, जीवन, व्यवहार पर मंगल असर पड़ता है।

तेयुप, गंगाशहर के कोषाध्यक्ष दीपक बोथरा ने बताया कि कार्यक्रम का मंगलाचरण मंड्या से समागत रितु दक ने पार्श्व स्तुति से किया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी और तेयुप के पदाधिकारियों द्वारा कार्यक्रम के प्रायोजक चंद्रकुमार, ललित, यश राखेचा परिवार का साहित्य से सम्मान किया। कार्यक्रम की संपन्नता पर देवेंद्र डागा द्वारा आभार ज्ञापन किया गया।

महामंत्र आरोहण अनुष्ठान

साहूकारपेट।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में 'महामंत्र आरोहण अनुष्ठान' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि जैन परंपरा का नमस्कार महामंत्र शिरमोर है। मंत्र प्रबल ऊर्जा है। विज्ञान की भाषा में 'पेरासोनिक साउंड थ्योरी' का उल्लेख मिलता है। प्रकंपन जितना शक्तिशाली होगा, ध्वनि प्रकंपन भी उतना शक्तिसंपन्न बनता है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि नमस्कार महामंत्र महामृत्युंजय मंत्र है। सारी सुरक्षाएँ विफल हो सकती हैं पर नमस्कार महामंत्र का सुरक्षा कवच कभी विफल नहीं होता है। विघ्न-बाधाओं से साधकों को दूर रखता है।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष उगमराज सांड ने कहा कि चातुर्मास में यह जप अनुष्ठान विलक्षण था, साध्वीश्री का श्रम प्रणम्य है। तेमम मंत्री रीमा सिंघवी ने कहा कि पूरे नगर में इस आध्यात्मिक उत्सव ने अनूठा रंग बताया है। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी सिद्धियशा जी, साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी, साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी, साध्वी डॉ० शौर्यप्रभा जी ने साध्वी मंगलप्रज्ञा जी द्वारा विरचित 'मंगल महामंत्र नवकार' गीतिका का सामूहिक संगान किया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा के सहमंत्री देवीलाल हिरण ने किया।

संकल्प शक्ति का कीजिए विस्तार

चंडीगढ़।

आत्मविश्वास से हमारी संकल्प शक्ति बढ़ती है और संकल्प शक्ति से बढ़ती है हमारी आत्मिक शक्ति। संसार के सारे युद्धों में इतने लोग नहीं हारते, जितने कि सिर्फ घबराहट से। अतः अपने ऊपर विश्वास रखकर ही आप दुनिया में बड़े से बड़ा काम सहज ही कर सकते हैं और अपना जीवन सफल बना सकते हैं। आत्मविश्वास में वह शक्ति है जिसके माध्यम से हम कुछ भी कर सकते हैं। यह शब्द मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने व्यक्त किए।

मुनिश्री ने कहा कि दुष्ट व्यक्ति भी सत्संगति पाकर सुधर जाते हैं। जैसे पारस के स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है। अध्यात्म के क्षेत्र में सत्संग का अत्यंत महत्त्व है। सत्संग से हमारे जीवन में विवेक जागृत होता है। सत्संग आनंद व कल्याण का मूल है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि मानव को ज्ञानी व तेजस्वी लोगों की संगति करनी चाहिए। मानव सामाजिक प्राणी है, कहते हैं कि मनुष्य अपनी संगति से पहचाना जाता है। मानव की संगति जैसी होती है वह धीरे-धीरे वैसा ही बन जाता है। अज्ञानी का संग मानव के व्यक्तित्व व चरित्र का पतन करता है। वहीं ज्ञानी का साथ व्यक्ति के व्यक्तित्व का उन्नयन करता है।

✦ *तुम कार्यकर्ता बनना चाहते हो। यह अच्छी बात हो सकती है। पर तुम यह सोचो—तुम्हारा अपने काम, क्रोध व भय पर नियंत्रण है या नहीं?*

— आचार्यश्री महाश्रमण

मंगलभावना समारोह के आयोजन

रोहिणी, दिल्ली

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी का चातुर्मास समाप्ति के अवसर पर तेरापंथी सभा, रोहिणी द्वारा मंगलभावना समारोह का आयोजन रखा गया। साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी ने इस अवसर पर कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें तेरापंथ भैक्षव शासन मिला है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि रोहिणी श्रावक समाज सजग एवं जागरूक समाज है। संघ भक्ति एवं गुरुनिष्ठा यहाँ के श्रावकों में बेजोड़ है। इसके अतिरिक्त हमने अनुभव किया कि कुछ पाने की चाह सदैव बनी रहती है, यही कारण है कि पूरे चातुर्मास में संवत्सरी के पश्चात भी हमेशा जमघट जमा रहा। इस कार्यकाल में हम चारों साध्वियों की तरफ से सभी से बहुत-बहुत खमतखामणा।

साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा कि रोहिणी के संपूर्ण तेरापंथ समाज की आध्यात्मिक चेतना सदैव अग्रणी रूप से कार्यकारी रही, जिससे यह चातुर्मास ऐतिहासिक बन सका। उन्होंने कहा कि साध्वी कुंदनरेखा जी का श्रम रंग लाया और यहाँ पर निरंतर प्रभावी कार्य होते रहे। इसके अतिरिक्त तेरापंथी सभा, दिल्ली, तेयुप, महिला मंडल, ज्ञानशाला के कार्यकर्ता प्रशिक्षिकाएँ, टीपीएफ का भी भरपूर सहयोग रहा। सबसे खमतखामणा।

तेरापंथी सभा, रोहिणी के अध्यक्ष विजय जैन ने चातुर्मास कार्यक्रमों की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि लगभग ३० अठाइयाँ, २५० पौषध जो पहली बार भवन में साध्वीश्री जी की प्रेरणा से हुए। भक्तामर अनुष्ठान, नमिऊण एवं उपसर्गहर स्तोत्र के साथ-साथ 'फुल मून मेडिटेशन' अद्भुत रहा। जिसमें सैकड़ों लोगों की सहभागिता रही। तेरापंथी सभा, दिल्ली के उपाध्यक्ष नत्थुराम जैन, तेरापंथी सभा, रोहिणी के अध्यक्ष गिरीश जैन सहित अन्य सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं सदस्यों ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

इस अवसर पर दीक्षार्थी मुदित जैन ने अपने पिता मनोज जैन, मम्मी सीमा जैन एवं अपने भाई सहित गीतिका का संगान कर साध्वियों की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। दीक्षार्थी मुदित जैन के लिए साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि मुदित होनहार सौभाग्यशाली युवक है, जो आचार्यश्री महाश्रमण जी के श्रीचरणों में अपनी महाव्रत-यात्रा प्रारंभ करने जा रहा है।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा, रोहिणी ने मुदित के मंगल भविष्य की शुभकामना करते हुए उसे माल्यार्पण, तिलक एवं अन्य शुभ वस्तुएँ भेंट कर वर्धापना की। रोहिणी सभा के महामंत्री राजेंद्र सिंघी ने कहा कि रोहिणी में साध्वीश्री जी का ऐतिहासिक सफलतम चातुर्मास रहा। आए हुए सभी श्रावक-श्राविकाओं का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन प्रवीण सिंघी ने किया।

राजाराजेश्वरी नगर

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के चातुर्मास की परिसंपन्नता पर मंगलभावना एवं विहार कार्यक्रम का आयोजन साध्वीश्री जी के सान्निध्य में किया गया। नमस्कार महामंत्र से आरंभ हुए कार्यक्रम में मंगलाचरण गायक मनीष पगारिया ने किया। सभाध्यक्ष छत्र सिंह सेठिया, ट्रस्ट अध्यक्ष मनोज डागा, तेममं अध्यक्ष लता बाफना, तेयुप के अध्यक्ष कौशल लोढ़ा, विक्रम मेहर, सुमन पटावरी आदि ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता एवं सरल मन से खमतखामणा के भाव प्रकट किए।

महिला मंडल, कन्या मंडल, तेयुप द्वारा संगीतमय प्रस्तुतियाँ, तेरापंथ टाइम्स के संपादक दिनेश मरोठी, अभातेममं सदस्या मधु कटारिया, कंचन छाजेड़, मधु कोठारी आदि अनेक लोगों ने साध्वीवृंद के प्रति मंगलभावना प्रकट की।

साध्वी अमितरेखा जी, साध्वी अर्हमप्रभा जी, साध्वी रत्नप्रभा जी ने अपने प्रवासकालीन अनुभवों को साझा किया। शासनश्री साध्वीश्री ने परंपरा रूप से राजा परदेशी का व्याख्यान बाँचकर सभी से खमतखामणा करते हुए तेरापंथ भवन से विहार किया। मंत्री हेमराज सेठिया ने संयोजन किया।

विजयनगर

मुनि रश्मि कुमार जी, मुनि प्रियांशु कुमार जी का विजयनगर क्षेत्र में सफलतम आध्यात्मिक चातुर्मास के पश्चात मंगलभावना समारोह का तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित हुआ। सर्वप्रथम मुनिश्री के मंगलपाठ से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। मुनिश्री ने गीतिका का संगान किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी ने सभी का स्वागत किया। दोनों मुनिश्री के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि आपश्री का चार महीने का ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न होने जा रहा है। आपश्री के चातुर्मास में कई तपस्या, अनुष्ठान के कार्यक्रम एवं कार्यशालाएँ आयोजित हुई। सभा परिवार की तरफ से किसी तरह की अविनय असाधना हुई हो तो बारंबार खमतखामणा करते हैं।

सभा उपाध्यक्ष सुरेश मांडोत, तेयुप अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा, मंत्री राकेश पोखरना, अभातेयुप से प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरना, अभातेयुप सदस्य महावीर टेबा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों ने अपनी मंगलभावना प्रेषित की। वयोवृद्ध श्रावक सुवालाल चावत, मिश्रीलाल गांधी, पिस्ताबाई श्रीश्रीमाल ने विदाई गीतिका का संगान किया। महिला मंडल एवं ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा गीतिका का संगान किया गया।

मंगलभावना समारोह का दूसरा दिन मुनिश्री के नमस्कार मंत्र से कार्यक्रम शुरू हुआ। सभा के अभूतपूर्व अध्यक्ष पुखराज श्रीमाल, तेयुप के पूर्व अध्यक्ष अमित दक, सभा के निवर्तमान अध्यक्ष राजेश चावत सहित अनेक पदाधिकारीगण ने मंगलकामनाएँ प्रेषित की।

कार्यक्रम का तीसरा चरण मुनिश्री के मुखारविंद से मंगलपाठ के साथ शुरू हुआ। सर्वप्रथम मुनि प्रियांश कुमार जी ने कहा कि विजयनगर क्षेत्र काफी सुखकारी है। यहाँ के श्रावक बहुत ही विनम्र और आज्ञाकारी हैं। इन चार महीनों में इनका पूर्ण सहयोग मुझे मिला, गोचरी संबंधी यदि मेरे द्वारा कोई किसी भी श्रावक को ठेस लगा हो तो खमतखामणा।

मुनि रश्मि कुमार जी ने आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

सूरत

मुनि उदित कुमार जी के चातुर्मास संपन्नता के अवसर पर तेरापंथी सभा, सूरत के तत्त्वावधान में मंगलभावना समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन, सिटीलाइट में किया गया।

इस अवसर पर मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि गुरु आज्ञा से हम सूरत चातुर्मासार्थ आए। यहाँ पर अनेक धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। हमें पूज्य गुरुदेव की अनन्य कृपा प्राप्त हुई। मेरे दीक्षा गुरु जिनके साथ में मुझे सतत ४५ वर्ष तक रहने का उनकी सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, वैसे मंत्री मुनि सुमेरमल जी स्वामी के असीम आशीर्वाद हमारे साथ है। वास्तव में यही हमारी आध्यात्मिक पुँजी है।

मुनिश्री ने कहा कि यहाँ पर तेरापंथ सभा द्वारा अनेक कार्यक्रम हुए। ज्ञानशाला का शिविर भी हुआ। तेयुप द्वारा जैन विद्या कार्यशाला का आयोजन हुआ, जिसमें प्रतिदिन ५०० से अधिक भाई-बहन पहुँचकर ज्ञान प्राप्त करते थे। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह कार्यक्रम हुए। टीपीएफ द्वारा प्रबुद्धजनों की कॉन्फ्रेंस हुई, महिला मंडल द्वारा कई सेमिनार आदि हुए। पूज्य गुरुदेव ने सन् २०२४ का अपना चातुर्मास सूरत में करने की घोषणा की। यह अपूर्व एवं ऐतिहासिक घटना है। श्रावक समुदाय द्वारा यहाँ पर तपस्या में भी नए कीर्तिमान बने।

मुनि अनंत कुमार जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व का निर्माण करने के लिए संकल्पबद्ध होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति अपना लक्ष्य निर्धारित करें कि जब पूज्य गुरुदेव पधार रहे हैं तो २ साल के बाद किस मुकाम पर पहुँचना है। अध्यात्म के क्षेत्र में मुझे कितना विकास करना है?

तेरापंथी सभा, सूरत के अध्यक्ष नरपत कोचर, प्रधान न्यासी संजय सुराणा, महिला मंडल अध्यक्षा राखी बैद, तेयुप अध्यक्ष अमित सेठिया, अणुव्रत विश्व भारती के नव मनोनीत गुजरात प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल, अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के मंत्री सुनील श्रीश्रीमाल आदि ने मुनिश्री के प्रति मंगल भावनाएँ प्रस्तुत की। कन्या मंडल ने गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा, सूरत के मंत्री अनुराग कोठारी ने किया।

मंडिया

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा की ओर से मंगलभावना समारोह का आयोजन हुआ। समारोह की शुरुआत साध्वीवृंद ने नवकार महामंत्र के उच्चारण से की। मंगलाचरण तेयुप ने किया। साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि आत्मा और शरीर भिन्न है। इसीलिए इस शरीर का मोह छोड़कर परदेसी राजा की तरह अपनी आत्मा का कल्याण करें।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र की और आराधना करते हुए श्रावक-श्राविकाओं ने इन चार महीनों में जो ज्ञान प्राप्त किया है, उसे जीवन में अंगीकार करने से इस चातुर्मास का उद्देश्य पूरा होगा।

साध्वी मेरुप्रभा जी एवं साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। वरिष्ठ श्रावक चंदमल बोहरा, किरण भंसाली, पारसमल गुंदेचा, विनोद भंसाली, भवरलाल गोखरू, उपासिका ललिता भंसाली, उगमराज आच्छा, किशनलाल आच्छा ने अपनी भावना व्यक्त की। महिला मंडल से बहनों ने नाटिका प्रस्तुत की एवं गीतिका के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष नरेंद्र दक ने अपनी व समाज की तरफ से साध्वीश्री जी से विगत पाँच महीनों में हुई अविनय असातना के लिए क्षमायाचना की। कार्यक्रम में सभा मंत्री महावीर भंसाली, तेयुप अध्यक्ष प्रवीण दक, मंत्री कमलेश गोखरू तेयुप, महिला मंडल, कन्या मंडल एवं संपूर्ण तेरापंथ समाज उपस्थित रहा। कार्यक्रम का संचालन तेयुप अध्यक्ष प्रवीण दक ने किया।

कांटाबाजी

चातुर्मास की संपन्नता पर द्विदिवसीय मंगलभावना समारोह में मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि कांटाबाजी का ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न हो रहा है। चार महीने अध्यात्म का ठाठ लगा रहा। तप, त्याग से जीवन महान बनता है। त्याग करने वाला केवल वस्तु का ही नहीं अपितु आसक्ति का भी त्याग करता है। कांटाबाजी का श्रावक समाज धर्मसंघ के प्रति समर्पित, श्रद्धा, भक्ति-भावना से परिपूर्ण अध्यात्मनिष्ठ है। अपने जीवन में और अधिक धर्मनिष्ठ बनें।

तेरापंथ सभा, तेयुप, तेममं, कन्या मंडल, ज्ञानशाला सभी संस्थाओं के पदाधिकारी एवं जैन-अजैन समाज ने चातुर्मास में भरपूर लाभ उठाया। सबके प्रति मंगलभावना, सबसे खमतखामणा। मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि नदी, हवा, बादल एवं पंछी की तरह संतजन भी चलते रहते हैं। ये यायावर बनकर धर्म का बोध देते हैं।

तेयुप का उत्साह, कार्य करने की निष्ठा सेवाभावना अनुकरणीय है। महिला मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला परिवार के योगदान से चातुर्मास बहुत अच्छा कार्यकारी एवं सुखद रहा। कांटाबाजी का चातुर्मास मेरे लिए सुखद यादगार रहेगा।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष युवराज जैन, तेयुप अध्यक्ष अंकित जैन, महिला मंडल अध्यक्ष बॉबी जैन, कन्या मंडल संयोजिका पूजा ने वक्तव्य के द्वारा मुनिद्वय को मंगलकामना करते हुए कृतज्ञता व्यक्त की। चालीस से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने गीत, कविता एवं वक्तव्य के द्वारा मंगलभावना व्यक्त की। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने त्याग-संकल्प की भेंट मुनिद्वय को दी। प्रथम दिवस का संचालन गजानन जैन एवं संजय जैन ने किया। दूसरे दिन का संचालन सभामंत्री सुमित जैन ने किया। संपूर्ण श्रावक समाज ने कृतज्ञता व्यक्त करते हुए मुनिद्वय से क्षमायाचना की।

नबो जीवन आश्रम में भोजन वितरण

साउथ हावड़ा।

तेयुप, साउथ हावड़ा द्वारा नबो जीवन आश्रम में सुबह का नाश्ता वितरण किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ परिषद ने सामूहिक मंत्रोच्चार के साथ किया।

परिषद के उपाध्यक्ष हितेंद्र बैद ने सभी का स्वागत किया। आश्रम के १०५ मानसिक विकलांग रोगियों में सुबह का नाश्ता एवं मिठाई का वितरण परिषद के युवाओं द्वारा किया गया। कार्यक्रम में सहमंत्री अमित बेगवानी, संगठन मंत्री रोहित बैद, सामाजिक कार्य के संयोजक मनीष बैद सहित अजीत दुगड़ की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मनीष बैद ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
12 - 18 दिसंबर, 2022

✦ *उपासना से वासना का नाश किया जा सकता है। बशर्ते कि उपासना में सम्यक् लक्ष्य, सम्यक् विधि और सम्यक् निष्ठा हो।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

पहला प्रकरण

(१) अथ मनोनुशासनम्।।

(१) इस ग्रंथ में मन को अनुशासित करने की पद्धति बतलाई गई है अतः इसका नाम मनोनुशासनम् है।

ध्येयनिष्ठा

जीवन का सर्वोच्च ध्येय है–मुक्ति। बंधन किसी भी व्यक्ति को प्रिय नहीं है। जिसमें चेतना का किंचित् भी विकास है, उसमें मुमुक्षा है और वह इतनी अपरिहार्य है कि उसे मिटाया नहीं जा सकता। इसीलिए यह कहना सर्वथा संगत है कि मुक्ति जीवन का सर्वोच्च ध्येय है। जिसके ध्येय और प्रवृत्ति में विसंगति होती है, वह ध्येय के निकट नहीं पहुँच पाता। जैसे-जैसे ध्येय और प्रवृत्ति की विसंगति मिटती जाती है, वैसे-वैसे ध्येय सधता जाता है।

एक व्यक्ति का ध्येय है मुक्ति और वह खाता है शरीर की पुष्टि के लिए, सुनता है कान की तृप्ति के लिए और देखता है आँख की तृप्ति के लिए। यह ध्येय की विसंगति है। जब हमारा ध्येय अनेक रूपों में बँट जाता है, तब हम मूल को नहीं सींच पाते। शाखाओं, पत्तों और फूलों को सींचने का अर्थ होता है उनका सूख जाना। मूल सींचा जाता है तो शाखाएँ, पत्र और पुष्प अपने आप अभिषिक्त हो जाते हैं। यह ध्येय की संगति है। मूल को छोड़कर शेष अवयवों को सींचना ध्येय की विसंगति है। खाना शरीर-निर्वाह के लिए आवश्यक है। सुनना और देखना इंद्रियों की अनिवार्यता है। कान के पर्दे और आँख के गोलक को फोड़ा नहीं जा सकता। कोई भी आदमी निरंतर कान में रूई और आँख पर पट्टी बाँधकर बैठ नहीं सकता। जिसे आँख प्राप्त है, वह देखता है और जिसे कान प्राप्त है, वह सुनता है। देखना और सुनना अपने-आप में अच्छा भी नहीं है और बुरा भी नहीं है। उसमें अच्छाई और बुराई ध्येय के आधार पर फलित होती है। हम मुक्ति के लिए देखें, मुक्ति के लिए सुनें, मुक्ति के लिए खाएँ और मुक्ति के लिए जिएँ तो हमारा जीना भी साधना है, खाना भी साधना है, देखना और सुनना भी साधना है।

आचार्य हरिभद्र ने इसी तथ्य की अभिव्यक्ति इन शब्दों में की है–'मोक्खेण योयणाओ जोगो सव्वो वि धम्मवावारो'–वह सारा धार्मिक व्यापार योग है जो व्यक्ति को मुक्ति से जोड़ता है। योग वही है जो मुक्ति के लिए है और मुक्ति से जुड़ा हुआ है। बंधन के लिए या बंधन से जोड़ने वाली कोई भी प्रवृत्ति न धार्मिक हो सकती है और न यौगिक।

भगवान् महावीर ने कहा है–संयम से चलो, संयम से खड़े रहो, संयम से बैठो, संयम से सोओ, संयम से खाओ और संयम से बोलो, फिर पाप-कर्म का बंधन नहीं होगा। बंधन वहीं है जहाँ संयम नहीं है और मुकित का ध्येय निष्ठित हुए बिना जीवन में संयम आता नहीं। मुक्ति हमारे जीवन का ध्येय है और संयम ध्येय-पूर्ति की साना है। उन दोनों में सामंजस्य है। मुक्ति और असंयम में सामंजस्य नहीं है। हमारा ध्येय मुक्ति हो और हमारी जीवनगत प्रवृत्तियों में संयम न हो, वह ध्येय और ध्येय-पूर्ति की विसंगति है। जीवन में संयम लाने का प्रयत्न हो और मुक्ति का ध्येय निष्ठित न हो, वह भी विसंगति है। विसंगति की दशा में जिसकी निष्पत्ति हम चाहते हैं, वह निष्पन्न नहीं होता। इसकी निष्पत्ति ध्येय और साधना के सामंजस्य से ही हो सकती है।

कोई व्यक्ति मुमुक्षु है तो उसमें संयम होना स्वाभाविक है। मुमुक्षा उसकी प्रवृत्तियों का सहज भाव से नियमन करती है। मुमुक्षु व्यक्ति खाएगा किंतु खाने में आसक्त नहीं होगा। वह देखेगा और सुनेगा किंतु देखने और सुनने में उसकी आसक्ति नहीं होगी। आसक्ति और अनासक्ति के बीच भेदरेखा ध्येय के द्वारा ही खींची जाती है। जिसमें मुमुक्षा है, उसकी प्रवृत्ति इंद्रिय-तृप्ति के लिए नहीं हो सकती किंतु प्राप्त आवश्यकता की पूर्ति के लिए होती है। जहाँ प्रवृत्ति ध्येय की पूर्ति के लिए की जाती है, वहाँ धूप से बचाने वाली छत बन जाती है और जहाँ ध्येय को भुलाकर प्रवृत्ति की जाती है, वहाँ वह मोतिया बन जाती है। छत का हमारे लिए उपयोग है इसलिए हम उसे पसंद कर सकते हैं, किंतु मोतिया हमारी ज्योति को आवृत्त करता है इसलिए उसे पसंद नहीं किया जा सकता। हमारी ध्येयनिष्ठा दुर्बल होती है, उस स्थिति में प्रवृत्ति मोह और आवरण बन जाती है और हमारी ध्येयनिष्ठा प्रबल होती है तब प्रवृत्ति हमारा बचाव करने लग जाती है। इस सारी परिस्थिति में जो सत्य उभरता है वह है ध्येयनिष्ठा। जिसकी ध्येयनिष्ठा जितनी प्रबल होगी वह उतना ही जीवन की विसंगतियों से बच पाएगा। ध्येयनिष्ठा के अभाव में जीवन की विसंगतियों को मिटाने की बात हम सोच सकते हैं किंतु उन्हें मिटा नहीं पाते।

(२) इंद्रियसापेक्षं सर्वार्थग्राहि त्रैकालिकं संज्ञानं मनः।।

(३) स्पर्शन-रसन-घ्रान-चक्षुः श्रोत्राणि इंद्रियाणि।।

(२) मन संज्ञान का एक स्तर है। उसकी व्याख्या तीन विशेषणों से की जाती है–

(क) वह इंद्रियों के द्वारा गृहीत विषयों में प्रवृत्त होता है, इसलिए इंद्रिय-सापेक्ष है।

(ख) वह शब्द, रूप आदि सब विषयों को जानता है, इसलिए सर्वार्थग्राही है।

(ग) वह भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों का संकलनात्मक ज्ञान करता है, इसलिए त्रैकालिक है।

(३) इंद्रियाँ पाँच हैं–(१) स्पर्शन, (२) रसन, (३) घ्राण, (४) चक्षु, (५) श्रोत्र।

इंद्रिय और मन

चैतन्य की दो भूमिकाएँ हैं–विकसित और अविकसित। विकास का सर्वाधिक निम्नस्तर एकेंद्रिय में होता है–उसके केवल एक स्पर्श इंद्रिय का विकास होता है। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय आदि जीवों के चैतन्य का क्रमिक विकास होता है। द्वीन्द्रिय को दो इंदिय स्पर्शन और रसन का ज्ञान प्राप्त होता है। त्रीन्द्रिय के घ्राण, चतुरिन्द्रिय के चक्षु और पंचेन्द्रिय के श्रोत्र विकसित हो जाते हैं। इंद्रिय विकास चैतन्य का पहला स्तर है। चैतन्य का दूसरा स्तर है–मानसिक विकास। वह केवल पंचेन्द्रिय जीवों को ही प्राप्त होता है।

मनुष्य पंचेन्द्रिय है और मानसिक विकास भी उसे प्राप्त है। यद्यपि इंद्रिय और मन दोनों चैतन्य के विकास हैं, फिर भी दोनों की विकास-यात्रा में बहुत तारतम्य है, इंद्रियाँ केवल वर्तमान को ही जानती हैं। मन भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों को जानता है। इंद्रियों में आलोचनात्मक ज्ञान की शक्ति नहीं है। मन में आलोचना की क्षमता है। वह इंद्रियों द्वारा गृहीत विषयों का ज्ञान करता है और स्वतंत्र चिंतन भी।

संज्ञान दो प्रकार के होते हैं–तात्कालिक और त्रैकालिक। तात्कालिक संज्ञान चींटी जैसे क्षुद्र प्राणियों में भी होता है। वे इष्ट की प्राप्ति के लिए प्रवृत्त और अनिष्ठ से बचने के लिए निवृत्त होते हैं किंतु वे भूत और भविष्य का संकलनात्मक संज्ञान नहीं कर सकते। उनमें स्मृति और कल्पना का विकास नहीं होता। त्रैकालिक संज्ञान में स्मृति और कल्पना का विकास होता है तथा उसमें भूत और भविष्य के संकलन की क्षमता होती है। इसलिए मन को दीर्घकालिक संज्ञान भी कहा जाता है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(११३)

युगपुरुष मनस्वी सन्तप्रवर
बन शांतिदूत भू पर आए
बदली युगजीवन की धारा
नव गीत क्रांति के जब गाए।।

श्रम की बूँदों का सिंधु सदा
लहराता था उनके आगे।
उसकी लहरों का नर्तन सुन
अलसाए सोए मन जागे।।

वे सान्द्र स्निग्ध कोमल उदार
नयनों में करुणा का सागर।
रस खींचा दुनिया ने उतना
जितनी जिसके कर में गागर।।

चलते निर्भय निश्चिन्त सदा
वे आँधी में तूफानों में।
चर्चे उनके हर गाँव नगर
घर ऑफिस और दुकानों में।।

हो खड़े सत्य की धरती पर
सपनों की दुनिया में जीते।
दिन कभी न वे होंगे विस्मृत
जो उनके साये में बीते।।

वे थे रहस्यमय ज्योतिर्मय
जन-जन के भाग्यविधाता थे।
आँखों में शनि मणि मस्तक में
युगद्रष्टा युग-निर्माता थे।।

क्या बात मुकद्दर की उनके
वे पैदाइशी सिकंदर थे।
जीवन की होगी क्या मिसाल
जैसे बाहर थे अंदर थे।।

हर सुबह शुभकर नाम जपें
हर शाम ध्यान उनका धर लें।
छवि बसा अलौकिक नयनों में
संत्रास प्राण का सब हर लें।।

(११४)

कर सारे सपने पूरे कृतकाम हो गए
पर मेरे सपनों में तो अब भी तुम आते।।

अपनों में अनुराग रहा है सारे जग का
पर तुम तो बेगानों को निज छाँह दे रहे
चिर परिचित दुनिया से मानो ऊब गए हो
अनजानी अनचीन्ही क्यों तुम राह ले रहे
क्या अपराध हुआ है इन अपने लोगों से
भूल गए क्यों तुम सारे वे रिश्ते-नाते।।

मझधारा में प्राण डूबते-उतराते हैं
पर खाली नौका को तुम उस पार खे रहे
हर धड़कन की आह पहुँच जाती है तुम तक
अपने गीतों पर ही क्यों तुम ध्यान दे रहे
कितने मंसूबे बाँधे इस जग ने तुम पर
बतलाओ फिर क्यों उसको यों ही भरमाते।।

तुमने जितनी साँसें दी जीने की खातिर
उनको ही हम आज यहाँ अविकल जीते हैं
तुमने कर विषपान स्वयं इमरत बाँटा था
उसे आज तक मुग्ध भाव से हम पीते हैं
पल-पल सफल तुम्हारा बीता इस धरती पर
अमरलोक में कैसे अपना समय बिताते?

(क्रमशः)

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

मेघः प्राह

(५) त्यक्तव्यो नाम देहोऽयं, पुरा पश्चाद् यदा कदा।
तत् किमर्थं हि भुञ्जीत, साधको ब्रूहि मे प्रभो!

मेघ बोला—प्रभो! पहले या पीछे जब कभी एक दिन इस शरीर को छोड़ना है तो साधक किसलिए खाए? मुझे बताइए।

भगवान् प्राह

(६) बहिस्तात् ऊर्ध्वमादाय, नावकांक्षेत् कदाचन।
पूर्वकर्मविनाशार्थं, इमं देहं समुद्धरेत्।।

भगवान ने कहा—साधक ऊर्ध्वलक्षी होकर कभी भी बाह्य-विषयों की आकांक्षा न करे। केवल पूर्व कर्मों के क्षय के लिए ही इस शरीर को धारण करे।

संसार और मोक्ष ये दो तत्त्व हैं। दोनों दो दिशाओं के प्रतिनिधि हैं। मोक्ष को अभीप्सित है आत्म-सुख और संसार को अभीप्सित है दैहिक सुख। मनुष्य जब दैहिक सुख से ऊब जाता है तब वह आत्मिक सुख की ओर दौड़ता है। फिर वह संसार में नहीं रहता। शरीर सुख आत्मिक सुख के सामने नगण्य है, लेकिन जो व्यक्ति उसे ही देखता है वह मोक्ष से दूर चला जाता है। मोक्षार्थी का लक्ष्य होता है आत्मिक सुख का आविर्भाव करना। वह दैहिक सुख से निवृत्त होता है और आत्मिक सुख में प्रवृत्त। उसे शरीर से मोह नहीं होता। वह शरीर-निर्वाह के लिए भोजन करता है, न कि स्वाद के लिए। शरीर-पोषण का जहाँ ध्येय होता है वहाँ मोक्ष गौण हो जाता है और जहाँ शरीर मोक्ष के लिए होता है वहाँ सारी क्रियाएँ मोक्षोचित हो जाती हैं।

इस श्लोक में शरीर-धारण या निर्वाह का एक मुख्य कारण बताया है और वह है कर्म-क्षय। कर्म-क्षय के अनेक हेतु हैं। देहधारी व्यक्ति ही धर्म-व्यवहार कर सकता है। इसी का समर्थन अगले श्लोक में किया गया है।

(७) विनाहारं न देहोऽसौ, न धर्मो देहमन्तरा।
निर्वाहं तेन देहस्य, कर्त्तुमाहार इष्यते।।

भोजन के बिना शरीर नहीं टिकता और शरीर के बिना धर्म नहीं होता, अतः शरीर का निर्वाह करने के लिए साधक भोजन करे, यह इष्ट है।

(८) व्रज्याक्षुत्शान्तिसेवायैः, प्राणसन्धारणाय च।
संयमाय तथा धर्मचिन्तायै मुनिराहरेत्।।

मुनि व्रज्या—गमनशक्ति, क्षुधाशांति, संयमी सेवा, प्राणधारण, संयम यात्रा तथा धर्मचिंतन कर सके वैसी शक्ति बनाए रखने के लिए भोजन करें। **(क्रमशः)**

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

धर्म बोध

शील धर्म

प्रश्न २५ : बाड़ व कोट किसे कहते हैं?

उत्तर : ब्रह्मचर्य की जो गुप्तियाँ अथवा समाधि-स्थान बताए हैं वे ही बाड़ हैं। जो इसके दस प्रकार मिलते हैं, उनमें अंतिम हैं पाँच काम-गुणों (शब्द, रूप, गंध, रस, स्पर्श) का परिहार। गाँव की सीमा पर अवस्थित बिना बाड़ का खेत पशु व झगड़े आदि से सुरक्षित नहीं रह सकता। वह तो तभी सुरक्षित रहेगा, जबकि खेत के चारों ओर बाड़ लगा दी जाए। जहाँ ब्रह्मचारी विचरण करता है, वहाँ स्थान-स्थान पर स्त्रियाँ हैं। इसी कारण शील रूपी खेत की सुरक्षा के लिए नौ बाड़ का कथन किया। नौ बाड़ व दसवें कोट के भीतर ब्रह्मचर्य सुरक्षित रहता है।

प्रश्न २६ : आहार का ब्रह्मचर्य के साथ क्या संबंध है?

उत्तर : आहार का ब्रह्मचर्य के साथ गहरा संबंध है। भगवान् महावीर ने कहा—'ब्रह्मचारी निरस-निःसत्त्व आहार कर, कम खाए। ब्रह्मचारी केवल संयम-यात्रा के निर्वाह के लिए ही सादा और परिमित आहार करे, स्वाद के लिए नहीं।' आचार्य भिक्षु ने ब्रह्मचारी के लिए ऊनोदरी तप को उत्तम तप बताया। उन्होंने कहा—'जिसकी जीभ वश में नहीं, वह सरस आहार की चाह करता है, परिणामस्वरूप व्रत भंग कर सारभूत ब्रह्मचर्य व्रत को खो देता है।'
महात्मा गांधी ने मिताहार व स्वाद विजय पर बल दिया है। उन्होंने कहा—'जो अपनी जिह्वा को कब्जे में रख सकता है, उसके लिए ब्रह्मचर्य सुगम हो जाता है। जिसने जीभ को नहीं जीता, वह विषय-वासना को नहीं जीत सकता।---ब्रह्मचर्य से अस्वाद व्रत का घनिष्ट संबंध है।---जो मनुष्य अतिभोजन करने वाला है, जो आहार में कुछ विवेक या मर्यादा ही नहीं रखता, वह विकारों का गुलाम है।' इनसे यह स्पष्ट है कि आहार का ब्रह्मचर्य के साथ गहरा संबंध है, इसलिए ब्रह्मचारी को सात्त्विक व अल्पाहारी होना अपेक्षित है। ब्रह्मचारी के लिए तामसिक, तली हुई व मिर्च-मसाले से रहित भोजन को उपयोगी माना गया है। **(क्रमशः)**

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

माणकगणी का वर्ण गौर, कद लंबा और कंठ मधुर व तेज था। शारीरिक प्रकृति से वे इतने कोमल थे कि सर्दी लगने पर एक लौंग लिया करते। यदि उससे अधिक ले लेते तो उन्हें गर्मी का आभास होने लगता। वे लंबी यात्राएँ पसंद करते थे। तेरापंथ के आचार्यों में हरियाणा में सर्वप्रथम पधारने वाले माणकगणी ही हैं। संघ-विकास की दृष्टि से माणकगणी ने अपना समय उन क्षेत्रों को अधिक दिया जहाँ पूर्वाचार्यों को विराजना कम हो सकता था।

माणकगणी का चिंतन परंपरापोषित व रूढ़ नहीं था। उनके द्वारा धर्मसंघ में कई नए उन्मेष आने की संभावना थी। लेकिन धर्मसंघ उनकी शासना से लंबे समय तक लाभान्वित नहीं हो सका। बयालीस वर्ष की अल्पायु में ही वि०सं० १९५४ कार्तिक कृष्णा तृतीया को सुजानगढ़ में उनका अचानक स्वर्गवास हो गया। वे आचार्य के रूप में पाँच वर्ष की संघ को सेवा दे सके। वे अपने पीछे किसी उत्तराधिकारी को नियुक्त नहीं कर सके।

तेरापंथ धर्मसंघ एक आचार्य केंद्रित धर्मसंघ है। माणकगणी दिवंगत हो गए। पीछे कोई उत्तराधिकारी के रूप में नियुक्त नहीं। कौन दायित्व संभाले? समूचे धर्मसंघ के लिए एक महान् चिंता का विषय था। पर दूसरे शब्दों में कहें तो चिंता नहीं, कसौटी का समय था। उस समय समूचे संघ ने एकमत से सप्तम आचार्य के रूप में डालगणी को चुनकर कसौटी पर खरे उतरने का एक अपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया।

माणकगणी के आचार्य-काल में चालीस दीक्षाएँ हुईं। उनमें पंद्रह साधु और पचीस साध्वियाँ थीं।

आचार्य डालगणी

पूज्य डालगणी तेरापंथ के सप्तम आचार्य थे। वे आगम-मर्मज्ञ, शास्त्रार्थ-निपुण, दृढ़-संकल्पी, उग्रविहारी, कष्टसहिष्णु एवं तेजस्वी आचार्य थे। उनका जन्म वि०सं० १९०९ आषाढ़ शुक्ला चतुर्थी को उज्जयिनी नगरी में हुआ। उनके पिता का नाम कानीरामजी एवं माता का नाम जड़ावांजी था। उनका गोत्र पीपाड़ा था।

पिता का देहावसान उनकी बाल्यावस्था में ही हो गया था। माता जड़ावांजी ने ही पिता और माता दोनों की भूमिका का कुशलता से निर्वाह किया।

जड़ावांजी धार्मिक प्रकृति की महिला थी। पति की मृत्यु से उन्हें भोगप्रधान जीवन से विरक्ति हो गई। बालक डालचंद ग्यारहवें वर्ष में प्रवेश करने तक काफी समझदार हो गया था। माता जड़ावांजी ने पारिवारिक जनों के संरक्षण में पुत्र की व्यवस्था कर संयम-जीवन अंगीकार कर लिया।

माता की दीक्षा ने बालक डालचंद को भी संयम जीवन ग्रहण करने हेतु उत्सुक बना दिया। उसकी वैराग्य-भावना दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई। वि०सं० १९२३ भाद्रपद कृष्णा द्वादशी के दिन इंदौर में जयाचार्य की अनुमति से मुनि हीरालालजी ने उन्हें दीक्षित किया।

मुनि-जीवन में डालगणी को चार वर्ष तक जयाचार्य का निकट सान्निध्य प्राप्त हुआ। डालगणी के लिए यह समय ज्ञानार्जन की दिशा में वरदान सिद्ध हुआ। उन्होंने आगमों का गंभीर अध्ययन किया। उनकी तलस्पर्शी प्रतिभा आगमों के सूक्ष्म रहस्यों को खोजने में सक्षम सिद्ध हुई। उनकी तार्किक मेधा ने उन्हें महान् चर्चावादी बनाया। अनेक बार उन्होंने शास्त्रविद् संतों, पंडितों एवं श्रावकों के साथ धर्म-चर्चाएँ कीं। वि०सं० १९३० में वे अग्रणी बने। अग्रगण्य अवस्था में उन्होंने सुदूर प्रदेशों की यात्राएँ कीं। कच्छ की यात्रा उन्होंने तीन बार की। कच्छ की जनता उनके तेजोमय व्यक्तित्व से अभिभूत थी। वहाँ के लोग उन्हें 'कच्छी पूज' कहते थे।

आचार्य माणकगणी के स्वर्गवास के पश्चात् वि०सं० १९५४ में डालगणी तेरापंथ के सप्तम आचार्य बने। तेरापंथ की व्यवस्था के अनुसार भावी आचार्य का निर्वाचन वर्तमान आचार्य ही करते हैं। पर माणकगणी का बयालीस वर्ष की अल्पायु में ही अचानक स्वर्गवास हो गया। उस समय भावी आचार्य का निर्वाचन एक जटिल पहेली थी। किंतु सब साधु-साध्वियों ने एकमत होकर डालगणी का नाम निर्वाचित कर लिया। यह इतिहास की विलक्षण घटना है और डालगणी के व्यक्तित्व का उजला पृष्ठ है।

(क्रमशः)

✦ *एक प्रमुख आदमी अनेक व्यक्तियों को प्रमुख बनने के योग्य बनाए, उनका निर्माण करे तो समाज व देश कितना शक्तिशाली बन जाएगा।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अणुव्रत का स्वर्णिम प्रभात-पूर्व संध्या की सप्तरंगी' कार्यक्रम का आयोजन

चेम्बूर, मुंबई।

अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित 'अणुव्रत का स्वर्णिम प्रभात-पूर्व संध्या की सप्तरंगी' कार्यक्रम चेम्बूर में मुनि महेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र एवं अणुव्रत गीत से किया। आचार संहिता का वाचन अणुविभा राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने किया। अणुव्रत समिति, मुंबई की अध्यक्षा कंचन सोनी ने सभी का स्वागत एवं अभिनंदन किया। मुनि अभिजीत कुमार जी ने कहा कि अणुव्रत के नियम सभी अपने जीवन में उतारें और जन-जन को नशामुक्त बनाने का प्रयास करें। संघ गायक रिंकू राठी ने गीतिका प्रस्तुत की।

मुनि जंबू कुमार जी ने कहा कि अणुव्रत समिति, मुंबई को लकीर को आगे खिचते हुए और भी नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करनी हैं।

राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अणुव्रत समिति, मुंबई को अधिवेशन में प्रथम स्थान मिलने पर अणुव्रत समति, मुंबई का सम्मान किया और कहा कि कार्य करने की गति और भी तेजी से बढ़े। हमारा समाज ही नहीं बल्कि अन्य सभी वर्गों के लोगों तक अणुव्रत के नियम पहुँचें और उन्हें जीवन बेहतर बनाने में प्रयास करें। स्कूल, कॉलेज, सरकारी ऑफिस, जन-जन के घर अणुव्रत की गूँज हो।

मुख्य न्यासी तेजकरण सुराना ने कहा कि अणुव्रत की ज्योति हमेशा जलती रहनी चाहिए। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए तेजराज बंबोलि, नवरत्न गन्ना, सुमति गोटी, मदन तातेड़, रामलाल संचेती ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर अणुव्रत समिति, मुंबई द्वारा अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर, उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, सहमंत्री मनोज सिंघवी, महाराष्ट्र प्रभारी रमेश धोका, कार्यसमिति सदस्य राजकुमार चपलोत, देवेंद्र डागलिया, राजेश मेहता को सम्मानित किया। बालोदय एडीयूटूर के कार्यकर्ताओं को भी सम्मानित किया गया।

जैन विश्व भारती के महामंत्री सलिल लोढ़ा, चातुर्मास समिति अध्यक्ष मदन तातेड़, मुंबई सभा उपाध्यक्ष नवरत्न गन्ना, नरेंद्र तातेड़, तेरापंथी सभा, चेम्बूर, अध्यक्ष जुगराज, अभातेयुप निवर्तमान अध्यक्ष संदीप कोठारी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम को सफल बनाने में लतीका डागलिया, प्रियंका सिंघवी, सुशील हिरण, शीला चंडालिया, महावीर सोनी, मधु मेहता, मधु सियाल व सभी क्षेत्रीय संयोजक, सह-संयोजक का श्रम रहा।

ज्ञानशाला वार्षिक उत्सव का आयोजन

भीलवाड़ा।

साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा, भीलवाड़ा के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला का वार्षिक उत्सव तेरापंथ नगर के महाश्रमण सभागार में आयोजित हुआ। साध्वी डॉ० परमयशा जी ने कहा कि 'गुड द बेस्ट' का संकल्प है—ज्ञानशाला। बच्चे देश का भविष्य हैं, भगवान के देवदूत हैं। संस्कार किसी मॉल में, मार्केट में नहीं मिलते, संस्कारों के निर्माण की पहली यूनिट है—परिवार। संस्कारों और संपन्न बनाने की दूसरी यूनिट है—ज्ञानशाला।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र तथा नन्हा ज्ञानार्थी कृतज्ञ रांका द्वारा महाश्रमण अष्टकम् से प्रारंभ हुआ। ज्ञानशाला संयोजिका नीतू गोखरू ने सबका स्वागत किया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने गीत का संगान किया। सम्मान साध्वी डॉ० परमयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी और साध्वी कुमुदप्रभा जी ने ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव पर रोचक प्रस्तुति दी।

ज्ञानशाला की वार्षिक रिपोर्ट पूर्व संयोजिका सुमन लोढ़ा ने प्रस्तुत की। सभी ११ कॉलोनियों के ज्ञानार्थियों ने बेस्ट ब्यूटीफुल, मेवाड़ आंचलिक संयोजक अभिषेक कोठारी, अणुव्रत समिति के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष निर्मल गोखरू ने ज्ञानशाला के वार्षिकोत्सव में अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला प्रभारी लक्ष्मीलाल सिरोहिया, मुख्य प्रशिक्षिका सीमा बड़ोला, सह-संयोजिका सपना बाबेल ने किया। संचालन सभा मंत्री योगेश चंडालिया तथा आनंद बाला टोडरवाल ने किया। कार्यक्रम का आभार सह-संयोजिका शोभना सिरोहिया ने किया।

साध्वीवृंद का आध्यात्मिक मिलन समारोह

जसोल।

शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी व साध्वी रतिप्रभा जी ने क्रमशः बालोतरा व असाड़ा से विहार कर जसोल में प्रवेश किया। जसोल में विराज रहे शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी, शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी आदि व साध्वी रतिप्रभा जी, यानी तीनों सिंघाड़ों सहित १३ साध्वीवृंद का एक साथ आध्यात्मिक मिलन भगवान पैलेस जसोल में हुआ।

बालोतरा, जसोल से श्रावक समाज ने इस आध्यात्मिक मिलन को निहारकर धन्यता का अनुभव किया। बाद में अरिहंत नगर स्थित शा, मूलचंद, गौतमचंद डूंगरचंद सालेचा निवास, भगवान पैलेस, जसोल में प्रवेश हुआ। साध्वीवृंद का स्वागत-अभिनंदन कार्यक्रम रखा गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ शिवांगी बुरड़ द्वारा भिक्षु अष्टकम् व सालेचा परिवार महिलाओं द्वारा व तेममं के स्वागत गीत से हुआ। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष उषभराज तातेड़, गौतमचंद सालेचा, डूंगरचंद सालेचा, सभा मंत्री कांतिलाल ढेलड़िया, सुरेश डोसी सहित वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी, शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी, साध्वी रतिप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी कलाप्रभा जी, साध्वी ध्यानप्रभा जी, साध्वी श्रुतप्रभा जी, साध्वी यशस्वीप्रभा जी, साध्वी पावनयशा जी सहित साध्वीवृंद ने गीतिका के माध्यम से अपने भाव रखे। कार्यक्रम का संचालन साध्वी यशस्वीप्रभा जी ने किया।

प्रखर मंत्रवादी आचार्य थे श्रीमद् जयाचार्य

साहूकारपेट।

तेरापंथ सभा भवन में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में एवं संघीय संस्थाओं के आयोजकत्व में अनेक मंगलकारी अनुष्ठान संपन्न हुए, उसी शृंखला में 'मुणिन्दमोरा अनुष्ठान' के संदर्भ में साध्वीश्री जी ने कहा कि जयाचार्य की साधना का कवच शक्तिशाली था। वे एक सधे हुए स्थिरयोगी एवं महान मंत्र साधक थे। विघ्न-निवारक प्रभु जयाचार्य की साधना काफी प्रसिद्ध रही है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि आज का पवित्र दिन कार्तिक शुक्ला दशमी उनकी सधः रचित 'मुणिन्दमोरा' गीत की स्मृति दिला रहा है। किस प्रकार संघ के साधुओं को उपद्रव से जयाचार्य ने उबार लिया था। साध्वीश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ शक्ति संपन्न संघ है, इसकी नींव में हमारे शक्तिशाली आचार्यों की साधना के नीर का सिंचन मिला है। पहुँचे हुए साधक, साधिकाओं की साधना ने संघ को सदा सुरक्षा प्रदान की।

लिलुआ ज्ञानशाला की सार-संभाल

लिलुआ।

ज्ञानशाला की आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया के अभिनव चिंतन से लिलुआ ज्ञानशाला की सार-संभाल और निरीक्षण हेतु लिलुआ सभा द्वारा वृहद कोलकाता और दक्षिण बंगाल की आंचलिक समिति, प्रशिक्षिकाओं, अभिभावकों और ज्ञानार्थियों के साथ कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें ज्ञानशाला की सह-संयोजक संजय पारख, उपनगर क्षेत्रीय संयोजिका मंजु घोड़ावत, साउथ कोलकाता क्षेत्रीय संयोजक प्रकाश दुगड़, सभा के प्रमुख न्यासी चैनरूप छाजेड़ सहित अनेक पदाधिकारीगण, अभिभावकगण एवं १५ ज्ञानार्थी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक संगान से हुआ। प्रारूप के अनुसार गुरु वंदना, ज्ञानशाला गीत, प्रतिज्ञा आदि करवाए गए। अध्यक्ष प्रमिला बाफना ने सभी का स्वागत किया।

मंजु घोड़ावत ने बच्चों को शिक्षाप्रद कहानी सुनाई। लिलुआ सभा के कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा गीतिका का संगान किया गया। रणजीत सेठिया ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री रोशन चोपड़ा ने किया।

तीन धाराओं का आध्यात्मिक मिलन

एम०के०बी० नगर, चेन्नई।

एम०के०बी० नगर, चेन्नई जैन स्थानक में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी, साध्वी सिद्धिसुधा जी एवं साध्वी जिनाशा जी आदि १० साध्वियों का त्रिवेणी संगम जैसा मधुर आध्यात्मिक मिलन हुआ। इस अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि महावीर ने कहा साधना के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण सूत्र है—साधक अपनी आत्मा को पवित्र और निर्मल बनाए। जहाँ पवित्रता और निर्मलता होती है, वहीं प्रसन्नता का साम्राज्य होता है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि जैनशासन की प्रतिष्ठा के लिए संपूर्ण जैन समाज को जागरूक रहना होगा। समाज में विघटन की स्थितियों पर चिंतन करना होगा।

साध्वी सिद्धिसुधा जी ने कहा कि संत मिलन प्रेम का संदेश देता है। आज त्रिवेणी संगम, विचारों का विमर्श, सद्भावनाओं की सुगंध, हर व्यक्ति को आनंद प्रदान कर रहा है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि जहाँ एकता, प्रेम का प्रवाह होता है वहाँ सभी आनंद की गंगा में नहाते हैं। हम सभी एक ही पंथ के राही हैं। संपूर्ण समाज इस स्नेह मिलन से नई प्रेरणा लें, प्रसन्नता की अनुभूति करें।

साध्वी सुविधिश्री जी एवं साध्वी सुमतिश्री जी ने गीत प्रस्तुत किया। साध्वीवृंद ने गीत का सामूहिक संगान किया।

मूर्तिपूजक संप्रदाय से साध्वी जिनाशाश्री जी ने कहा कि जिनशासन की गरिमा बढ़ाएँ और धर्म की आराधना करके प्रवृत्ति को सुधारें, आज हमें अद्भुत त्योहार मनाने का अवसर मिला है। कार्यक्रम का संचालन सज्जनराज सुराणा ने किया।

ज्ञानशाला सार-संभाल

बेलुर।

बाली बेलुर ज्ञानशाला परीक्षण हेतु ज्ञानशाला की आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया एवं सह-संयोजक संजय पारख व साउथ कोलकाता क्षेत्रीय संयोजक प्रकाश दुगड़ सहित पर्यवेक्षक टीम बेलुर पधारी। आंचलिक संयोजिका ने ज्ञानशाला संचालन के नियमों के बारे में बताते हुए बच्चों के उच्चारण शुद्धि की सराहना की।

सह-संयोजक संजय पारख ने बच्चों के लिए कहा कि आज के बच्चे कल का भविष्य हैं। ज्ञानशाला के माध्यम से आप अपना भविष्य उज्ज्वल बनाकर समाज में हीरे की तरह चमकेंगे। क्षेत्रीय संयोजिका मंजु घोड़ावत ने भी आंचलिक संयोजिका को बच्चों के बारे में बताया व ज्ञानशाला के बारे में जानकारी प्रदान की।

ज्ञानार्थिओं द्वारा भिक्षु अष्टकम् एवं पच्चीस बोल की प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर बाली बेलुर सभा के अध्यक्ष शुभकरण दुगड़ ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। गुलाब दुगड़, संदीप स्यामसुखा भी उपस्थित थे। मुख्य प्रशिक्षिका ममता नाहटा ने सबका आभार व्यक्त किया।

आध्यात्मिक मिलन व मंगल विहार

आमेट।

मुनि प्रसन्न कुमार जी व मुनि यशवंत कुमार जी अनमोल मार्बल से ८ किलोमीटर का विहार करके आमेट पधारे। दोनों सिंघाड़ों का आमेट में आध्यात्मिक मिलन हुआ। मुनिश्री के रास्ते की सेवा में तेयुप अध्यक्ष पवन कच्छारा, मंत्री विपुल पितलिया सहित अनेक सदस्यों ने लाभ लिया। मुनिश्री के स्वागत में तेरापंथ सभा अध्यक्ष देवेंद्र मेहता, मंत्री ज्ञानेश्वर मेहता, मनोहर पितलिया, सुंदरलाल हिरण आदि की उपस्थिति रही।

मुमुक्षु दक्ष नखत का मंगलभावना समारोह

साउथ हावड़ा।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में सरदारशहर निवासी, साउथ हावड़ा प्रवासी दीक्षार्थी दक्ष नखत के मंगलभावना का कार्यक्रम तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। साउथ हावड़ा महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया। सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना ने सभी का स्वागत किया एवं पूरे साउथ हावड़ा समाज की ओर से दीक्षार्थी के प्रति आध्यात्मिक मंगलभावना के भाव व्यक्त किए।

सभा के मंत्री बसंत पटावरी ने दीक्षार्थी का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। छोटी-सी उम्र में कई विभिन्न प्रकार के तप, उनके वैराग्य भाव के उदय एवं दीक्षा की अनुमति से जुड़े कई प्रसंगों को सभी ने भावुकता से सुना।

महिला मंडल की अध्यक्षा चंद्रकांता पुगलिया, तेयुप अध्यक्ष बीरेंद्र बोहरा, सभा के निवर्तमान अध्यक्ष सुशील गिडिया, टीपीएफ निवर्तमान अध्यक्ष बीरेंद्र सेठिया, सभा के कार्यकारिणी एवं टीपीएफ सदस्य सुशील चोरड़िया, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका संतोष बांठिया, साउथ बंगाल ज्ञानशाला के आंचलिक सह-संयोजक संजय पारख ने अपने मंगलभावों की प्रस्तुति दी। तेयुप एवं महिला मंडल की बहनों ने गीत के माध्यम से दीक्षार्थी के प्रति अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

पिता दीपक नखत ने इस अवसर पर अपने विचार रखें एवं दीक्षार्थी के वैराग्य को पुष्ट करने में सहयोगी सभी संघीय संस्थाओं को साधुवाद दिया। दीक्षार्थी नखत ने अपने वक्तव्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति कृतज्ञता के भाव ज्ञापित किए।

कार्यक्रम में मुख्य न्यासी अशोक जैन, न्यासीगण जंवरीमल नाहटा, राजेंद्र चोपड़ा, मनोज कोठारी, सहमंत्री कपिल धारीवाल, संगठन मंत्री पवन बैंगानी आदि की उपस्थिति रही। साउथ हावड़ा महिला मंडल, तेयुप, टीपीएफ, अणुव्रत समिति ने कार्यक्रम में सहभागिता प्रदान की। सभा के उपाध्यक्ष मदन नाहटा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन सभा के सहमंत्री मनोज कोचर ने किया।

मधुर मिलन समारोह

बठिंडा

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी सुनाम चातुर्मास संपन्न कर संगरूर, बड़बर, धनोला, बरनाला, तपा, रामपुरा फूल में धर्म जागरणा करते हुए बठिंडा तेरापंथ भवन में पधारे। मुनिश्री ने कहा कि दशवैकालिक सूत्र में बताया गया है कि अपनी आत्म-सुरक्षा करनी चाहिए। आत्म-सुरक्षा के साथ स्वास्थ्य, परिवार, व्यापार की सुरक्षा अपने आप हो जाती है। अर्थात् जो व्यक्ति हिंसा, झूठ, दुराचार, दुर्व्यसन से बचकर रहता है वह सबका प्रिय बन जाता है। जो इन कामों में पड़ जाता है वह ना आत्म-सुरक्षा कर सकता है ना ही वह स्वास्थ्य परिवार, व्यापार की सुरक्षा कर पाता है। जो इनसे बचकर रहता है वही इस लोक ओर परलोक दोनों में सुखी हो सकता है, धर्म ही ऐसा सच्चा साथी है जिससे व्यक्ति सर्वत्र प्रतिष्ठा का पात्र बनता है।

इस अवसर पर गोविंदगढ़ चातुर्मास संपन्न कर पहुँची साध्वी प्रसन्नयशा जी से मधुर मिलन हुआ। मुनिश्री ने कहा कि साध्वी प्रसन्नयशा जी मस्त, आत्मास्थ, स्वस्थ, प्रस्थ, विश्वस्थ हैं, इनकी कला सबके लिए अनुकरणीय है। इस अवसर पर उपस्थित श्रावक समाज मधुर मिलन को देखकर बाग-बाग हो गया। मिलन के अवसर पर मुनि नमि कुमार जी, मुनि अमन कुमार जी ने भी अपने भावों की प्रस्तुति दी। गोनियाना, गोविंदगढ़, बठिंडा के भाई-बहनों ने सामायिक सहित सेवा, उपासना का लाभ लिया।

कविता प्रतियोगिता का आयोजन

भीलवाड़ा।

साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में गोखरू निवास पर तेमम के तत्त्वावधान में अध्यात्म एवं देश भक्ति विषय पर कविता प्रतियोगिता आयोजित की गई। नवकार महामंत्र उच्चारण से इस कार्यक्रम का मंगलाचरण हुआ। साध्वी परमयशा जी ने कहा कि मंच पर आकर अच्छा बोलना भी एक कला है। अच्छा वक्ता बनने के लिए मन में आत्मविश्वास और लगन होनी चाहिए। स्वयं को हीन नहीं, बेस्ट समझें। सकारात्मक भाव के साथ बोलने का अभ्यास करना चाहिए।

यह प्रतियोगिता जूनियर व सीनियर दो वर्ग में रखी गई। छोटे-छोटे बच्चों ने रोचक प्रस्तुतियाँ देकर सबका मन मोह लिया।

साध्वी परमयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी, साध्वी कुमुदप्रभा जी ने अपनी स्वरचित कविताएँ सुनाई। इस प्रतियोगिता के प्रायोजक लादीदेवी किशनलाल गोखरू रहे। निर्णायक कमल दुगड़ एवं नीलम लोढ़ा रहे। जूनियर में प्रथम लव्य बोरदिया, द्वितीय इशिका बोरदिया, तृतीय स्निग्धा जैन एवं सीनियर में प्रथम मुदित बड़ाला, द्वितीय अक्षी बूलिया, तृतीय लक्ष्मीलाल सिरोहिया रहे। सभी ने पूरे उत्साह से कार्यक्रम में भाग लिया।

सभी विजेताओं का प्रायोजक परिवार एवं संस्था पदाधिकारियों द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण रतनदेवी कोठारी ने महाश्रमण अष्टकम् के संगान से किया। कार्यक्रम का संचालन नीतू गोखरू, पायल बुलिया ने किया। सभी प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। कार्यक्रम में महाप्रज्ञ सेवा संस्थान अध्यक्ष प्रकाश कर्णावट, किशनलाल गोखरू, पारसमल गोखरू, आनंद बाला टोडरवाल एवं अन्य श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

तेमम की ओर से सभी के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

रोलिंग शील्ड प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन

चेन्नई।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, चेन्नई के तत्त्वावधान में रात्रिकालीन कार्यक्रम में भंवरलाल, प्रकाशचंद मूथा आजीवन रोलिंग शील्ड प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन हुआ।

साध्वीश्री जी के मंगलाचरण के साथ प्रतियोगिता प्रारंभ हुई। सभाध्यक्ष उगमराज सांड ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किए। राजश्री डागा ने प्रतियोगिता के लिए नियम बताते हुए प्रतियोगिता का संचालन किया। संयोजिका कमला गेलड़ा ने संचालन में अच्छा सहयोग किया। कुल ८ ग्रुप बनाए गए। जिसमें वसंता बाबेल एवं सपना सेठिया प्रथम रहे। जिन्हें प्रायोजक प्रकाशचंद मूथा ने रोलिंग शील्ड व पारितोषिक देकर सम्मानित किया। द्वितीय स्थान प्राप्तकर्ता शकुंतला गेलडा एवं पिंकी गेलड़ा रही। तृतीय स्थान प्राप्त किया स्नेहलता पगारिया एवं पूजा वेद मूथा ने। सभी प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया।

साध्वीश्री जी ने इसे एक कला बताते हुए कहा कि ज्ञानवर्धन की इस कला द्वारा सभी ज्ञानार्जन के क्षेत्र में आगे बढ़ते रहें। सभा की ओर से प्रतियोगिता के संयोजक मनोज डूंगरवाल ने कार्यक्रम आयोजना की व्यवस्था बनाई।

संतों का आध्यात्मिक मिलन

ओडिसा।

साध्वी डॉ० मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी एवं मुनि जिनेश कुमार जी का आध्यात्मिक मिलन पाणीकोइली ग्राम में हुआ। आध्यात्मिक मिलन के पश्चात सभी मुनिवृंद उद्योगपति परशुराम दास के निवास परिसर में पधारे। जहाँ मुनिवृंदों के सान्निध्य में संक्षिप्त, आध्यात्मिक मिलन समारोह का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर कटक, भुवनेश्वर, जाजपुर रोड, भद्रक कोलकाता आदि क्षेत्रों से श्रद्धालुगण उपस्थित थे।

इस अवसर पर मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा कि दूर प्रदेशों में संतों का मिलन दुर्लभ है। तेरापंथ धर्मसंघ में संतों का मिलन समारोह बन जाता है। उड़ीसा में गुरुकृपा से इस वर्ष संतों के चार चातुर्मास हुए। आज मुनि जिनेश कुमार जी, मुनि परमानंद जी व मुनि कुणाल कुमार जी से मिलकर प्रसन्नता हुई। मुनित्रय की आगामी यात्रा मंगलमय हो।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी, ने आगंतुक मुनिवरों का स्वागत करते हुए कहा कि गृहस्थ हस्त मिलन करते हैं और संत हृदय मिलन करते हैं। इसलिए संत मिलन का विशिष्ट महत्त्व है। आज संयमी मुनियों के दर्शन कर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी तेरापंथ धर्मसंघ के विशिष्ट संत हैं, वे तपस्वी व ज्ञानी संत हैं। मुनि विमलेश कुमार जी प्रतिभासंपन्न व मुनि पदम कुमार जी श्रमशील संत हैं। तीनों मुनिवरों से मिलकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। आध्यात्मिक मिलन प्रमोद भावना, गुण ग्राहकता, उदारता, प्रेम का परिचायक है। मुनित्रय की आगामी यात्रा सातापूर्वक हो, ऐसी मंगलकामना करता हूँ।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी, डॉ० मुनि विमलेश कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त किए। बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर आध्यात्मिक मिलन गीत का संगान किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथ सभा, कटक के कार्यकर्ताओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

मंगल विहार कार्यक्रम का आयोजन

गंगाशहर।

गंगाशहर श्रावक समाज ने चातुर्मास परिसंपन्नता पर मुनियों को भावपूर्ण विदाई दी। मुनि जितेंद्र कुमार जी आदि पाँच संतों के मंगल विहार हुआ। ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न कर मुनि जितेंद्र कुमार जी एवं उनके सहवर्ती मुनि सुधांशु कुमार जी, मुनि अनुशासन कुमार जी, मुनि अनेकांत कुमार जी, मुनि गौतम कुमार जी ने तेरापंथ भवन से मंगल विहार किया।

इस अवसर पर मुनियों को विदाई देने श्रावक-श्राविकाओं का हुजूम उमड़ पड़ा। सभी नम आँखों से मुनिवृंद के प्रति मंगलभावना प्रकट कर रहे थे।

मुनि जितेंद्र कुमार जी आदि ने वयोवृद्ध मुनि शांति कुमार जी से मंगलपाठ श्रवण कर प्रस्थान किया। मुनि जितेंद्र कुमार जी ने कहा कि गंगाशहर श्रावक समाज ने चातुर्मास के दौरान जिस प्रकार धर्म की आराधना की वह निरंतर बढ़ती रहे। मुझे आज सात्त्विक प्रसन्नता है कि यहाँ के श्रावक समाज ने मेरे हर इंगित को बहूमान दिया और श्रद्धा भक्ति के साथ चातुर्मास की आराधना की।

नैतिकता के शक्तिपीठ से विहार कर मुनिवृंद उदासर पहुँचे। जहाँ पर साध्वी शशिरेखा जी से आध्यात्मिक मिलन हुआ।

आध्यात्मिक मिलन समारोह का आयोजन

सरदारपुरा, जोधपुर।

सरदारपुरा स्थित मेघराज तातेड़ भवन में शासनश्री साध्वी सत्यवती जी व शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी आदि साध्वियों का आध्यात्मिक मिलन हुआ।

साध्वी सत्यवती जी सहयोगी साध्वियों के साथ अमरनगर भवन में चातुर्मास संपन्न कर व साध्वी कुंथुश्री जी आदि साध्वियों ने जाटाबास स्थित तेरापंथ भवन में वर्ष २०२२ का चातुर्मास संपन्न किया है। इसके पूर्व साध्वी सत्यवती जी ने शास्त्री नगर से विहार किया और तेरापंथी सभा व तेयुप, सरदारपुरा के सदस्यों के साथ तातेड़ भवन पधारे। वहीं साध्वी कुंथुश्री जी रातानाडा से विहार कर तातेड़ भवन पधारे।

इस अवसर पर तेरापंथ समाज के श्रावक-श्राविका इस आत्मीय मिलन के दृश्य को देख भाव-विभोर हो गए।

✦ *आदमी को अहिंसा, संयम और तप में पुरुषार्थ करना चाहिए। इन तीनों में सम्यक् पुरुषार्थ करने वाला आदमी मोक्ष की दिशा में गतिमान हो सकता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
12 - 18 दिसंबर, 2022

✦ *मधुर बोलना अच्छा है, पर मधुरता के लिए झूठ बोलना अच्छा नहीं है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

Ikigai-Make Your Life Lighthouse कार्यशाला का आयोजन

कांटाबाजी।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम के तत्त्वावधान में कांटाबाजी कन्या मंडल द्वारा 'Ikigal-Make Your Life Lighthouse' कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ कन्या मंडल के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत पूर्व संयोजिका सीए अनुपमा जैन ने किया।

महिला मंडल अध्यक्षा बॉबी जैन, मंत्री सपना जैन एवं महिला मंडल सदस्या मनीषा जैन ने Ikigai का मतलब समझाया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता ममता जैन ने सभी कन्याओं से सकारात्मक सोच रखते हुए श्रमशील बनने का आह्वान किया।

अपने जीवन का Ikigai समझकर उस ओर कदम बढ़ाने की प्रेरणा दी। कन्या मंडल सदस्या नम्रता जैन ने अपने पैशन को प्रोफेशन कैसे बनाएँ, बताया। कन्या मंडल एवं महिला मंडल ने मिलकर सामूहिक चर्चा की। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल प्रभारी पूजा जैन ने किया। आभार ज्ञापन पलक जैन ने किया।

द पॉवर ऑफ पॉजिटिविटी शिल्पशाला

कोयंबटूर।

अभातेमम के तत्त्वावधान में कोयंबटूर तेमम ने शिल्पशाला 'द पॉवर ऑफ पॉजिटिविटी' पर कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसकी शुरुआत मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुई। बाद में बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। तत्पश्चात अध्यक्षा मंजु देवी गिड़िया ने आगंतुकों का स्वागत किया।

उपासिका सुशीला बाफना, सविता बैद, पूजा दुगड़, वंदना पारख, सविता भंडारी, मुक्ता नखत एवं गुणवंती बोहरा ने दिए गए सभी विषयों पर अपने-अपने विचार रखे।

दूसरे चरण में डॉ० सेल्वराजन और डॉ० स्वाथनथिरा देवी ने आरोग्यम 'स्वस्थ परिवार-स्वस्थ समाज' के अंतर्गत कार्डियेक (हार्ट) अटैक, लंग्स फेलियर हो जाए तो उससे कैसे बचा जा सकता है, इसके बारे में प्रेक्टिकल नॉलेज मेनिक्वीन के जरिए करके बताया।

कार्यक्रम का संचालन सुरेखा सेमलानी ने किया और अंत में धन्यवाद ज्ञापन मंत्री आरती रांका ने दिया।

साहूकारपेट, चेन्नई।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम के तत्त्वावधान में 'द पॉवर शिल्पशाला कार्यशाला' का आयोजन हुआ। कार्यशाला का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। नारी लोक का वाचन अध्यक्षा पुष्पा हिरण ने किया। प्रेरणा गीत का संगान महिला मंडल बहनों द्वारा हुआ। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन सहमंत्री कंचन भंडारी ने किया। अध्यक्षा पुष्पा हिरण ने सभी का स्वागत करते हुए सकारात्मक एवं नकारात्मक दृष्टिकोण के विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में उपासक संतोष रांका को आमंत्रित किया गया।

मुख्य वक्ता उपासक संतोष रांका ने 'द पॉवर ऑफ पॉजिटिविटी' विषय पर वक्तव्य में सकारात्मक एवं नकारात्मक विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जो चीजें हमें डिस्टर्ब करती हैं, वह नेगेटिव हैं, मिथ्या ज्ञान है। हर परिस्थिति को स्वीकार करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास कैसे हो, इस विषय पर अनेक उदाहरण के माध्यम से समझाया। जो विचार हमें तकलीफ देते हैं, डिस्टर्ब करते हैं, वह हिंसा है, उसी को नेगेटिविटी कहा गया है। अहंकार विलय के लिए जैन धर्म के अनेक प्रयोग बताए।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री रीमा सिंघवी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सहमंत्री लता पारख ने दिया। इस अवसर पर परामर्शक सूरज मूथा, पदाधिकारीगण एवं कार्यसमिति सदस्य का सहयोग रहा।

उत्सव रिश्तों का-प्रेम देवरानी-जेठानी का

कोटा।

अभातेमम के तत्त्वावधान में तेमम, कोटा द्वारा देवरानी-जेठानी कार्यशाला साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में आयोजित की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिटो अध्यक्ष अनिता जैन एवं मुख्य वक्ता इंटरनेशनल मोटिवेशनल स्पीकर प्रज्ञा मेहता रही।

महिला मंडल अध्यक्ष उषा बाफना द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। साध्वी अणिमाश्री जी ने देवरानी-जेठानी रिश्ते को कैसे मधुर बनाएँ व कैसे लंबे समय तक रिश्ते बनाए रखें, इस पर अपना उद्बोधन दिया।

प्रतियोगिता में कुल १५ देवरानी-जेठानी जोड़ों ने भाग लिया। प्रथम विजेता जोड़ी राजश्री सुराणा एवं शीतल सुराणा रहे। द्वितीय स्थान पर रेनू दुगड़ एवं जयश्री दुगड़ रहे। अधिकतम समय ४३ वर्ष से साथ में रह रहे हीरावत परिवार की २ देवरानी-जेठानी जोड़ी को सम्मानित किया गया। १५ वर्ष तक साथ में रह रहे जोड़ों को भी सम्मानित किया गया।

पुरस्कार के प्रायोजक महिला मंडल की सुशीला ठाकुर गोता रहे। कार्यक्रम का संयोजन रुचि जैन, सुरेखा जैन, अन्नू जैन एवं अंजू जैन ने किया। कार्यक्रम का संचालन रुचि जैन व अन्नू जैन ने किया। अंत में महिला मंडल की मंत्री सुनीता जैन ने आभार व्यक्त किया।

संत हरते हैंपाप, ताप और संताप

चेन्नई।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि जहाँ संतचरण टिकते हैं, वहाँ प्रकाश ही प्रकाश होता है। चंद्र ताप का, गंगा पाप का और संत पाप, ताप और संताप का हरण करने वाले होते हैं।

साध्वीश्री जी ने इतिहास प्रसिद्ध भरत चक्रवर्ती का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि भरत जैसे अनेक समृद्ध व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने राग से वैराग्य और वैराग्य से वीतराग पद प्राप्त किया। महावीर ने कहा कि हर व्यक्ति आत्मनिरीक्षण की दिशा में प्रस्थान करे। आवश्यकता है हम सिर्फ महावीर की जय ही नहीं बोलें महावीर की राह पर चलें, क्योंकि हम महावीर पंथी हैं।

मधुर गीत का रसपान कराने के पश्चात साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने कहा कि जिनशासन की प्रभावना में चतुर्विध संघ का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी प्रतिभासंपन्न प्रबुद्ध साध्वी हैं, जिन्होंने समणी वर्ग के २७ वर्षों में अनेक यात्राएँ की। अपनी ज्ञान चेतना से जन-जन को लाभान्वित किया। भगवान महावीर की वाणी विदेशों में पहुँचाई। दीक्षा के मात्र चार दिन बाद आचार्यश्री महाश्रमण जी ने इन्हें अग्रणी बना दिया।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ जैन भवन, व्यासरपाड़ी पधारी, तो वहाँ विराजित आचार्य कल्पतरु सूरि की शिष्या साध्वी जयरेखा जी आदि ग्यारह साध्वियों से आपका आध्यात्मिक मिलन हुआ। दोनों ओर की साध्वियों ने मिलन पर प्रसन्नता जताते हुए आपसी सुखपृच्छा की।

इस अवसर पर तेरापंथ साहूकारपेट ट्रस्ट, अध्यक्ष विमल चिप्पड़, उपासक पद्म आंचलिया, ताराचंद आंचलिया एवं तेरापंथ महिला मंडल की पूर्व अध्यक्षा कमला गेलड़ा, श्रावक लालचंद मेहता आदि उपस्थित थे।

शिक्षा का लक्ष्य है - जीवन में संस्कारों का निर्माण

बावड़ी, भीलवाड़ा।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में 'शिक्षा का लक्ष्य है संस्कारों का निर्माण' के कार्यक्रम का आयोजन हुआ। साध्वी परमयशा जी ने कहा कि विद्यालय एक नंदनवन है। अध्यापक इसके कल्पवृक्ष हैं। विद्यार्थी इसके मुस्कराते फूल हैं। शिक्षा पराग है। शिक्षा का लक्ष्य है संस्कारों का जागरण, नैतिक मूल्यों का विकास। शिक्षा-साक्षर और शिक्षित बने। आग्रह नहीं अनाग्रही बने। मन से सुपर मेन होने के लिए एकलव्य जैसी गुरु निष्ठा हो। श्रवण कुमार जैसी मातृ-पितृ भक्ति हो। विवेकानंद जैसी चारित्र निष्ठा हो। जीवन-विज्ञान जीने की कला सिखाता है। जीवन-विज्ञान का प्रयोग प्रार्थना सभा में नियमित रहे, ताकि आप सब लाभान्वित हों।

साध्वी विनम्रयशा जी ने कहा कि आपका भविष्य श्रेष्ठ बने इसके लिए जरूरी है बड़ों का आदर-सत्कार करें।

साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने स्मरण शक्ति विकास के विविध प्रयोग एवं महाप्राण ध्वनि, शशांक आसन आदि के प्रेक्टिकल प्रयोग करवाए। साध्वी कुमुदप्रभा जी ने गुस्से को शांत करने के लिए अनेक प्रयोग बताते हुए कहा कि विद्यार्थी जीवन में गुस्सा डेंजर है। गुस्से से विद्या प्राप्त नहीं होती। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि कार्यक्रम में माणक दुगड़ एवं चंद्रकांता चोरड़िया ने मंगलाचरण किया और अपने विचार व्यक्त किए। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने कहा कि हमारा सौभाग्य है कि संतों का शुभागमन हमारे विद्यालय के प्रांगण में हुआ। विद्यालय में लगभग ३५० विद्यार्थियों ने शांत भाव से कार्यक्रम सुना।

अध्यात्म की मौलिकता त्रैकालिक है

मैसूर।

साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी ने तेरापंथ भवन में अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि आधुनिक विकास मात्र शरीर का ढाँचा माना जाता, जब तक उसमें अध्यात्म का प्राण संचार नहीं होता, तब तक वह जीवन समरस नहीं बनता, इसलिए अध्यात्म की मूल्यवत्ता त्रैकालिक सत्य के साथ जुड़ी हुई है, इसकी प्रेरणा के लिए साधु-साध्वियों का आगमन होता, क्योंकि साधु-साध्वियाँ अध्यात्म का मूर्त रूप होते हैं।

साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने कहा कि शुभ भावधारा में रहने वाला व्यक्ति अपने जीवन को धन्य बनाता है। साध्वी प्रबोधयशा जी ने गीत का संगान किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रकाश दक ने साध्वियों का स्वागत किया। ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण कर, दूसरे दिन का प्रवास महेंद्र नाहर के निवास स्थान पर हुआ। रात्रि में धम्म जागरणा का आयोजन भी रखा गया।

मानव सही अर्थ में मानव बने

जालोर।

वैश्विक परंपरा में ऋषियों का बहुत बड़ा महत्त्व रहा है। ऋषिजन संस्कार, संस्कृति और परंपरा के विकास के साथ जीवन विकास के मूल्यों को संजीवन देने का कार्य करते हैं। भारतीय मूल्य मानक ऋषियों की प्रेरणा की महान सौगात है। ये विचार जालोर जिले के प्रथम प्रवास में प्रवासित राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बालवाडा, जालोर को संबोधित करते हुए मुनि मोहजीत कुमार जी ने रखे।

मुनिश्री ने वर्तमान में शिक्षा प्रणाली के किताबी ज्ञान के साथ संस्कार और संस्कृति को सुरक्षित रखने का बोध दिया। उन्होंने कहा कि जीवन में डॉक्टर, इंजीनियर, जज आदि बनना बड़ी बात नहीं, असली मानव बनना बड़ी बात है।

मुनिश्री ने विद्यार्थियों को संकल्प शक्ति, एकाग्रता एवं विद्या विकास के अनेक प्रयोग बताए। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने नशामुक्त रहने का संकल्प किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य सूरजाराम जी ने मुनिगण का स्वागत एवं आभार व्यक्त किया।

दीक्षार्थी खुशबू कोचर की शोभायात्रा एवं धर्म जागरण

सूरत।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में दीक्षित होने जा रही मुमुक्षु खुशबू का शोभा यात्रा एवं धर्म जागरण का आयोजन किया गया। शुभ एन्क्लेव वेसू से विशाल शोभा यात्रा प्रारंभ होकर बड़ी संख्या में जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, तेमम, तेयुप एवं किशोर मंडल के सदस्यों तथा श्रावक-श्राविकाओं के साथ जय घोष करते हुए सेलिब्रिटी ग्रीन में पहुँची। वहाँ दीक्षार्थी खुशबू कोचर का मंगलभावना समारोह का आयोजन किया गया।

रात्रि में तेयुप की भजन मंडली द्वारा शुभ एन्क्लेव के प्रांगण में दीक्षार्थी खुशबू कोचर के मंगलभावना के उपलक्ष्य में एक भक्ति संध्या का आयोजन किया गया। जिसमें तेयुप अध्यक्ष अमित सेठिया, मंत्री अभिनंदन गादिया, पदाधिकारी एवं सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही।

सम्यक् दर्शन कार्यशाला का दीक्षांत समारोह

अहमदाबाद।

मुनि कुलदीप कुमार जी एवं मुनि मुकुल कुमार जी के सान्निध्य में सम्यक् दर्शन कार्यशाला दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें मुनि कुलदीप कुमार जी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की।

तेयुप, अहमदाबाद के अध्यक्ष अरविंद संकलेचा ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। 'सम्यक् दर्शन कार्यशाला-२०२२' में अहमदाबाद का कुल उत्तीर्ण परिणाम ९७:६४ प्रतिशत रहा।

कुल ३८१ परीक्षार्थियों में से ३७२ उत्तीर्ण हुए। (५०० से अधिक फार्म भरे गए)। समण संस्कृति संकाय (जैन विश्व भारती) द्वारा कार्यशाला एवं परीक्षा संचालन के लिए तेयुप, अहमदाबाद को प्रथम स्थान दिया गया।

अभातेयुप के राष्ट्रीय अधिवेशन में भी सम्यक् दर्शन कार्यशाला के लिए तेयुप, अहमदाबाद को प्रथम स्थान दिया गया।

पूरे भारत और विदेश के ४०१३ परीक्षार्थियों में से अहमदाबाद की मंजु सांखला को आठवाँ स्थान प्राप्त हुआ। अहमदाबाद से २०० में से २०० मार्क्स प्राप्त करने वाले कुल ६ परीक्षार्थी हैं।

मुनि कुलदीप कुमार जी ने तेयुप की सराहना करते हुए कहा कि तेयुप, अहमदाबाद जो संकल्प लेता है उसे दृढ़-निश्चय के साथ पूर्ण करता है।

प्रायोजक परिवार महावीर भंसाली एवं सरला देवी स्व० नेमीचंद मालू परिवार की विशेष उपस्थिति रही। तेयुप के सभी पदाधिकारी एवं कार्यसमिति की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन तेयुप के मंत्री दिलीप भंसाली ने किया।

मंगलभावना समारोह एवं विहार

भीलवाड़ा।

मुनि पारस कुमार जी, मुनि शांतिप्रिय जी का प्रज्ञा भारती महावीर कॉलोनी से अनिल चोरड़िया के निवास महावीर कॉलोनी एवं साध्वी डॉ० परमयशा जी का तेरापंथ भवन नागौरी गार्डन से शंकरलाल पितलिया के निवास कांचीपुरम में मंगल विहार हुआ।

मुनि पारस कुमार जी ने सभी के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामनाएँ व्यक्त की। मुनि शांति कुमार जी ने कहा कि श्रावक-श्राविकाएँ अधिक से अधिक धर्म, ध्यान, त्याग, तपस्या, स्वाध्याय करते हुए समय का सदुपयोग करें।

साध्वी डॉ० परमयशा जी ने कहा कि आचार्यश्री की आज्ञा से अहमदाबाद से भीलवाड़ा आए। भीलवाड़ावासियों का सौभाग्य है कि उन्हें दो चातुर्मास मिले इसलिए चार तीर्थ का लाभ मिला। सहवर्ती साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी, साध्वी कुमुदप्रभा जी तीनों का अनन्य सहयोग रहा।

साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में मंगलभावना कार्यक्रम आयोजित हुआ। मंगलभावना कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष जसराज चोरड़िया, महिला मंडल अध्यक्षा मीना बाबेल, अणुव्रत समिति के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष निर्मल गोखरू, वरिष्ठ श्रावक नवरतनमल झाबक, तेयुप अध्यक्ष कमलेश सिरोहिया सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों ने मंगलभावों की अभिव्यक्ति दी।

भिक्षु भजन मंडली, तेरापंथ कन्या मंडल एवं तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा गीतिका का संगान किया गया। युवती बहनों द्वारा साध्वी समुदाय की विशेषताओं को दर्शाता लघु संवाद प्रस्तुत किया। २०२२ के चातुर्मास कार्यक्रम की झलकियाँ प्रोजेक्टर के माध्यम से दिखाई गई। कार्यक्रम का मंगलाचरण माणक दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री योगेश चंडालिया ने किया। आभार सभा सहमंत्री सुशील आच्छा ने किया।

प्रमोद भावना का प्रतीक है आध्यत्मिक मिलन

मंडिया।

मुनि रश्मि कुमार जी एवं साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी का मधुर मिलन मध्य रास्ते में मंडिया के नजदीक सोमनहली में एस०एम० कृष्णा के निवास स्थान पर हुआ। यह अद्भुत मिलन समारोह देखने जनसैलाब उमड़ा।

मुनि रश्मि कुमार जी ने कहा कि हम सब सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें अध्यात्म से ओतप्रोत तेरापंथ धर्मसंघ मिला है। ऐसे सुव्यवस्थित संघ पर हमें नाज है, जिसकी गरिमा बेअंदाज है। आचार्यश्री महाश्रमण जी के अनुशासन व छत्रछाया में हम सब पल्लवित-पुष्पित हो रहे हैं।

साधु-संतों के सान्निध्य से जीवन का कायाकल्प हो जाता है। प्रखर प्रवक्ता मुनि धर्मचंद पीयूष जी के उदार, वात्सल्य व स्नेहयुक्त आंचल रूपी छाँव में सिंचित होने का मौका मिला। गुरुकृपा व मुनिप्रवर के आशीर्वाद से विजयनगर का चातुर्मास सफल हो पाया।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि आज दिल की कली-कली विकसित हो भीतर में अति प्रसन्नता है।, हमारा सौभाग्य है। जैन धर्म और मर्यादा निपुण तेरापंथ धर्म जैसा अनुशासित संघ मिला। शासनश्री साध्वी नगीनाश्री जी एवं शासनश्री साध्वी पद्मावती जी ने मुझे सत्संस्कारों से सिंचन किया। तभी हम सुव्यवस्थित कार्य कर पाए। स्नेह, आत्मीय भाव एवं प्रमोद भावना का प्रतीक है—मिलन समारोह।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि साधु-संत ज्ञान के रत्नद्वीप व जीवन कला के मर्मज्ञ होते हैं। मुनि प्रियांशु कुमार जी ने अहोभाव व्यक्त करते हुए कहा कि मेरा सौभाग्य है, तेरापंथ धर्मसंघ मिला। माता-पिता तुल्य मुनिप्रवर का सहयोग मिला व जीवन जीने की कला मिली।

सभा अध्यक्ष नरेंद्र दक, उपाध्यक्ष किशन आच्छा, विजयनगर के तेयुप अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा, महिला मंडल मंत्री सुमित्रा बरड़िया, महिला मंडल, मंडिया अध्यक्ष पुष्पा बाफना, कन्या मंडल, महिला मंडल ने गीतिका के द्वारा स्वागत किया। तेयुप अध्यक्ष प्रवीण दक ने विचार रखे।

'सत्य की जीवंत प्रस्तुति' नाटक का मंचन

आर०आर० नगर।

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी द्वारा लिखित नाटिका सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र को आरआर नगर महिला मंडल की बहनों ने रोचक एवं भावनात्मक 'सत्य की जीवंत प्रस्तुति' नाटक के रूप में प्रस्तुत किया। महिला मंडल अध्यक्षा लता बाफना ने सबका स्वागत किया।

मंत्री सीमा छाजेड़ ने प्रारंभिक संचालन कर नाटक की सह-संयोजिका पूनम दुगड़ को संचालन हेतु आमंत्रित किया।

इस नाटक के विभिन्न किरदार निभाए—शिप्रा कोठारी, पूजा पटावरी, कविता बैद, आर्या संचेती, हेमलता सुराणा, प्रियंका कोठारी, मधु कोठारी, सपना तातेड़, प्रिया छाजेड़, दीपिका दुगड़, प्रमिला छाजेड़, संगीता डागा, किरण मेहता, अनु कोठारी, पद्मा मेहतर ने।

संयोजिका मंजु बोथरा और सह-संयोजिका पूनम दुगड़ का नाटक की तैयारी में पूरा श्रम रहा।

विशिष्ट लेखन और अमिट कर्तृत्व से अमर
शासनमाता की पहली बार प्रस्तुत हैं
अंग्रेजी भाषा में अनूदित 11 कृतियां

ये करती हैं जीवन में नई रोशनी का संचार
और लाती हैं हर दिन नई प्रेरणा की बहार।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित
इन नवीन कृतियों की प्राप्ति हेतु संपर्क करें-

+91 874 200 4849/4949
books@jvbharti.org

Available on:
https://books.jvbharti.org
Flipkart amazonkindle
Sambodhi A Speako Library amazon

और घर बैठे पाएं ज्ञान, विश्वास एवं शक्ति की त्रिवेणी।

✦ *निराश बनने में जल्दी मत करो। ध्यान दो, कोई उपाय है क्या? हो सकता है कि तुम्हें कोई मार्ग मिल जाए।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

दक्षिणांचल विराट युवा सम्मेलन 'अन्वेषण' में युवकों ने की स्वयं की खोज

बैंगलुरु।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप के निर्देशन में दक्षिणांचल विराट युवा सम्मेलन का आयोजन हुआ। अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा, उपाध्यक्ष रमेश डागा, महामंत्री पवन मांडोत, कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा, मुख्य अतिथि विमल कटारिया, प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरना, शाखा प्रभारी सोनू डागा, बैंगलुरु परिषद अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा एवं मंत्रीमंडल के साथ दक्षिण की अनेकों परिषदों के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

कार्यक्रम का प्रारंभ राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा के ध्वजारोहण एवं मुनि अर्हत कुमार जी के मंगल मंत्रोच्चार के साथ हुआ। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने करवाया। तेयुप बैंगलुरु अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा एवं तेरापंथ सभा, गांधीनगर अध्यक्ष कमल दुगड़ ने सभी का स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए परिषद द्वारा कृत कार्यों की संक्षिप्त प्रस्तुति दी। मुनि अर्हत कुमार जी के श्रम की प्रशंसा की।

मुख्य अतिथि विमल कटारिया ने कहा कि युवा जोश के साथ किसी भी प्रकार के कार्य हाथ में ले सकता है। आपने कहा कि वही युवा सफल होता है जो अपने समाज से जुड़कर रहता है। तेयुप, बैंगलुरु द्वारा संचालित प्रज्ञा संगीत सुधा ने मुनि अर्हत कुमार जी द्वारा रचित अन्वेषण थीम सॉन्ग की प्रस्तुति दी।

मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि उत्साह-उमंग भरा मन, जीवन का अक्षयकोष तन और जोश के साथ होश सहित चिंतन और मंथन का नाम है–युवा व्यक्तित्व। युवा उम्र से नहीं होता, युवक वह होता है जिसकी रीढ़ की हड्डी लचीली हो, सकारात्मक दृष्टिकोण हो, जो तनावमुक्त रहना जानता हो। जिसके हाथ में यौवन की पतवार हो, जिसमें संयम और विवेक हो। मुनिश्री ने प्रासंगिक वक्तव्य के माध्यम से युवा शक्ति को धर्म व समाज की महत्ता समझाते हुए इनसे जुड़कर रहने की प्रेरणा दी।

युवा संत मुनि भरत कुमार जी ने सभी से आह्वान करते हुए प्रेक्षाध्यान व स्वाध्याय से ज्ञान-ध्यान बढ़ाकर स्वयं का अन्वेषण करने की प्रेरणा प्रदान की। बाल संत मुनि जयदीप कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यौवन शौर्य और पराक्रम का प्रतीक है जो स्वयं गति करते हुए समाज को भी प्रगतिशील बनाता है।

महामंत्री पवन मांडोत ने अभातेयुप के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालते हुए अपने विचार व्यक्त किए। राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने युवकों को स्व-हित और पर-हित करने की प्रेरणा दी। आपने कहा कि युवा पहले स्वयं का कल्याण करे, फिर परिवार और व्यापार का ध्यान करे और उसके बाद समाज सेवा का काम करे। आपने कहा कि तेयुप एकमात्र ऐसी संस्था है जो सामाजिक एवं आध्यात्मिक दोनों तरह के कार्य पूर्ण निष्ठा के साथ करती है।

मुख्य वक्ता मोटिवेशनल स्पीकर एवं माइंड सेट कोच राहुल कपूर जैन ने वक्तव्य से युवकों को धर्म का मर्म समझाया और जैन धर्म के संस्कारों को जीवन में लाने के लिए उदाहरण के माध्यम से प्रेरित किया।

कार्यक्रम में उपस्थित सभी परिषदों का अभातेयुप एवं तेयुप, बैंगलुरु के पदाधिकारियों द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम के प्रभारी विनोद कोठारी एवं संयोजक सुरेश संचेती, आलोक कुंडलिया ने सभी के प्रति कृतज्ञता एवं आभार के भाव प्रकट किए। कार्यक्रम का संचालन मंत्री विकास बाबेल एवं रोहित कोठारी ने किया।

रात्रिकालीन सत्र में प्रज्ञा संगीत सुधा एवं भीलवाड़ा से समागत ऋषि दुगड़ द्वारा गीतों की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम में दक्षिण भारत की ३० परिषदों के सदस्यों एवं गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति थी। बैंगलुरु परिषद के अनेकों अभूतपूर्व अध्यक्षों ने कार्यक्रम में सहभागी दी। सम्मेलन में मंत्री मंडल, कार्य समिति सदस्यों एवं किशोर मंडल के सदस्यों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

नि:शुल्क लिपिड प्रोफाइल टेस्ट

राजाजीनगर।

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, श्रीरामपुरम के अंतर्गत तृतीय वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में नि:शुल्क लिपिड प्रोफाइल टेस्ट का आयोजन किया गया। शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से किया गया।

शिविर में कुल ७२ लोग लाभान्वित हुए। सभी को एटीडीसी श्रीरामपुरम द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवाओं एवं विभिन्न डॉक्टरों की उपलब्धता से अवगत करवाया गया।

इस अवसर पर राजाजीनगर, तेयुप अध्यक्ष अरविंद गन्ना, कमलेश चोरड़िया, राजेश देरासरिया एवं एटीडीसी स्टॉफ ज्योति, दिव्या, दीपाश्री एवं पवन ने शिविर को सुव्यवस्थित आयोजन करने में अपना श्रम नियोजित किया।

एटीडीसी की तृतीय वर्षगाँठ पर कार्यक्रम का आयोजन

राजाजीनगर।

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, श्रीरामपुरम का तृतीय वर्षगाँठ समारोह अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत की अध्यक्षता में जैन संस्कार विधि से मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत पंच परमेष्ठी नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई। संस्कारक रनीत कोठारी एवं राजेश देरासरिया ने विभिन्न मंत्रोच्चार के द्वारा नमस्कार महामंत्र का जाप किया।

तेयुप, राजाजीनगर अध्यक्ष अरविंद गन्ना ने सभी का स्वागत किया। अभातेयुप राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत, अभातेयुप अभूतपूर्व अध्यक्ष एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विमल कटारिया, जैनम् लक्ष्मीनारयाण ट्रस्ट के अध्यक्ष रमेश सियाल ने तेयुप के प्रति शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक, दिनेश पोखरना, तेरापंथ सभा अध्यक्ष रोशनलाल कोठारी, शाखा प्रभारी तेजराज चोपड़ा, अभातेयुप परिवार, जैनम् लक्ष्मीनारायण ट्रस्ट परिवार सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। एटीडीसी के दानदाताओं एवं कार्यक्रम के प्रायोजक रमेशचंद चावत का एटीडीसी पट से सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री कमलेश चोरड़िया ने किया।

सेवा कार्य

साउथ हावड़ा।

अभातेयुप की शाखा, तेयुप द्वारा क्षेत्र के बदामी देवी आश्रम के निकट बस्ती के बच्चों के बीच जाकर बाल दिवस पर बच्चों को पाठ्य सामग्री, कॉपी, पेंसिल, केक, बिस्कुट वितरण करते हुए सेवा कार्य किया।

कार्यक्रम का प्रारंभ परिषद ने नमस्कार महामंत्र के साथ किया। परिषद के संगठन मंत्री रोहित बैद ने सभी का स्वागत किया। कुल २०० बच्चों में सभी सामग्री का वितरण परिषद के युवाओं द्वारा किया गया। आए हुए बच्चों ने गीतिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में मंत्री गगन दीप बैद, संगठन मंत्री रोहित बैद, सामाजिक कार्य के संयोजक मनीष बैद की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन सामाजिक कार्य के संयोजक मनीष बैद ने किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

पर्वत पाटिया।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप का 'एक ही संकल्प-एक ही लक्ष्य' मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के तहत रक्तदान शिविर का आयोजन हिंदुस्तान टेक्सटाइल्स मार्केट-२ में किया गया। नमस्कार महामंत्र के सामूहिक मंगलाचरण कर कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

शिविर में ३८ यूनिट रक्त संग्रहित हुआ। अभातेयुप से सीपीएस के राष्ट्रीय प्रभारी एवं वापी तथा वलसाड जैसी परिषद के प्रभारी कुलदीप कोठारी की उपस्थिति रही।

● अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में १३ यूनिट रक्त संग्रहित हुआ।

● अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा चतुर्थ रक्तदान शिविर का आयोजन अभिषेक रेसीडेंसी पार्ट-१ में किया गया। जिसमें १५ यूनिट रक्त संग्रहित हुआ।

अभातेयुप से सीपीएस के प्रभारी कुलदीप कोठारी की उपस्थिति रही।

विद्यार्जन के लिए सौहार्दपूर्ण वातावरण जरूरी

राजसमंद।

'विद्यार्थी में पढ़ाई का मूल्य' विषय पर प्रवचन का आयोजन महात्मा गांधी हायर सेकेंडरी स्कूल, राजनगर में किया गया। तेयुप के मंत्री अंकित परमार ने बताया कि शासनश्री मुनि रविंद्र कुमार जी के सहवर्ती संत मुनि अतुल कुमार जी ने कहा कि हम आने वाली पीढ़ी को एक बेहतर नागरिक के रूप में आगे बढ़ते हुए देखना चाहते हैं।

अभिभावकों को बच्चों को व्यक्तिगत रूप से समझाना होगा। किसी भी कार्य को सिखने के लिए एक सौहार्दपूर्ण वातावरण बहुत जरूरी है। अनेक शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि दंड और भय किसी भी तरह सिखाने में बच्चों की मदद नहीं करते।

कार्यक्रम में प्रधानाचार्य कमलेश कुमार काहाल्या, विद्यालय से भूपेंद्र कुमार लड्ढा, घनश्याम माहेश्वरी, प्रीति गुप्ता, चेतना जैन, किरण बघाला, लक्ष्मीनारायण पालीवाल, हेमेंद्र सिंह ने विचार रखे। रमेश मांडोत, जगदीश बेरवा, विजय मादरेचा, सभा अध्यक्ष ख्यालीलाल चपलोत उपस्थित रहे। आभार मदनलाल रेगर ने व्यक्त किया।

अहंकार और आलस्य हमारे शत्रु के समान : आचार्यश्री महाश्रमण

चावंडिया कलां, २ दिसंबर, २०२२

जैन एकता के प्रतीक आचार्यश्री महाश्रमण जी पावन धाम जैतारण से १२ किलोमीटर विहार कर चावंडिया के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय परिसर में पधारे। परम पावन ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे शरीर में पाँच इंद्रियाँ जो ज्ञानेन्द्रियाँ हैं तथा पाँच कर्मेन्द्रियाँ भी हैं। कान, चक्षु, नासिका, रसन और स्पर्शन ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। हाथ-पाँव आदि पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं।

इन इन्द्रियों से हमारा कार्य भी होता है और ज्ञानेन्द्रियों से ज्ञान भी मिलता है। हाथ-पाँव हमारे चार नौकर के समान हैं, जो हमारा काम करते हैं। इनमें न तो अहंकार और न आलस्य आड़े आए। तीन कारण से आदमी अपना काम करने से इतराता है—अहंकार, आलस्य और व्यस्तता।

आलस्य बड़ा शत्रु है, तो परिश्रम बड़ा मित्र है। परिश्रम करने वाला व्यक्ति दुःख और मानसिक पीड़ा से बच सकता है। व्यस्तता या असक्षमता से कभी दूसरों से काम कराना पड़ सकता है, पर आलस्य या अहंकार वश दूसरों से काम न करवाएँ। ये चार नौकर सक्षम और मजबूत रहें। यह एक प्रसंग से समझाया कि काम न करने वाला कभी बड़ा नहीं होता है।

जीवन में अच्छे संस्कार हों। स्थानीय विद्यार्थियों को अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार करवाए।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि हमारे एक मुनि अनिकेत कुमार जी महाराष्ट्र से राजस्थान आ रहे थे। अचानक उनकी शारीरिक स्थिति बिगड़ी और उनका देहावसान हो गया। उनके संसारपक्षीय पुत्र मुनि भी उनके साथ थे। उनकी संसारपक्षीय पत्नी व दो पुत्रियाँ भी साध्वियाँ हैं। संसारपक्षीय पारिवारिक जन भी आज यहाँ दर्शनार्थ आए हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में विद्यालय की बालिकाओं ने गीत की प्रस्तुति दी। शिक्षक ओमप्रकाश, कर्णसिंह ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। बायतू व्यवस्था समिति द्वारा विद्यालय परिवार का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ज्ञानार्जन के सशक्त माध्यम हैं आँख और कान : आचार्यश्री महाश्रमण

बांजाकुड़ी, ३० नवंबर, २०२२

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी १० किलोमीटर का विहार कर आनंदपुर कालू होते हुए बाजाकुड़ी स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पधारे। परमपूज्य कालू के परंपर पट्टधर ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे शरीर में पाँच ज्ञानेंद्रियाँ हैं। श्रोतेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय। इन ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से हमें ज्ञान प्राप्त होता है। बाह्य जगत से जोड़ने में ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ माध्यम बनती हैं।

ज्ञान प्राप्त करने में दो इंद्रियाँ विशेष महत्त्व वाली हैं। वे हैं, श्रोतेन्द्रिय और चक्षुरिन्द्रिय। कान से हम सुनते हैं, तो हमें कितनी जानकारियाँ हो जाती हैं। दुनिया को देखने में आँखों का उपयोग करते हैं। आँखों से देखी और कानों से सुनी बात का विश्वास होता है। आँखों से पुस्तक पढ़ने से कितना ज्ञान हो जाता है।

शास्त्रकार ने कहा कि सुनकर के आदमी कल्याण की बात को जानता है और पाप को भी जान लेता है। उसके बाद आदमी ये ध्यान दे कि क्या करना, क्या

नहीं करना? पुराने समय में तो हमारा ज्ञान सुनते-सुनते गुरु परंपरा से आगे से आगे चला होगा।

ज्ञान के साथ आचार भी ठीक हो तो जीवन में बहुत ज्यादा अच्छापन होता है। सुनने में जागरूकता रहे तो बात को अच्छी तरह ग्रहण किया जा सकता है। सुनकर मनन करके अच्छी बातों को जीवन में उतार लिया जाए, बस यह लक्ष्य रखें। प्रवचन सुनने से आदमी के संस्कारों में परिष्कार हो सकता है। संस्कार अच्छे हो सकते हैं।

कोश जानना पूरा ज्ञान नहीं होता है। सुनकर जीवन में उतार लेना अच्छा होता है। विद्या के संस्थानों में ज्ञान भी दिया जाता है। साथ में अच्छे संस्कार भी बच्चों को दिया जाए तो अच्छा काम हो सकता है। संस्कार अच्छे नहीं तो परिवार-समाज के लिए अच्छा नहीं होता है। विद्यार्थी समस्या का समाधान करने वाले हों।

मारवाड़ का एरिया है, यहाँ आचार्य भिक्षु का जन्म, विहार और महाप्रयाण हुआ था। पूज्य जयाचार्य भी मारवाड़ से जुड़े हैं। संतों के प्रवास से अच्छे संस्कार-जानकारियाँ प्राप्त हो सकती हैं। कल्याण को जाना जा सकता है। देश और विश्व अच्छा हो। शांति चाहिए तो अहिंसा के पथ पर चलना चाहिए। हिंसा से दुःख पैदा होता है। सब प्राणी सुख चाहते हैं, किसी को कोई दुःख न दें, आध्यात्मिक सहयोग दें।

हमारा सबके साथ मैत्री भाव रहे। संयममय, कल्याणमय जीवन हो। जागो और जगाओ, उठो ओर उठाओ। संत परंपरा स्वयं जागती रहे, औरों को जगाती रहे। ज्ञान हो तो आदमी अभाव में भी दुःखी नहीं बनता। समस्या होने पर भी भीतर से सुखी रहता है।

पूज्यप्रवर ने विद्यालय के विद्यार्थियों और स्थानीय लोगों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को समझाकर उनके संकल्प स्वीकार करवाए।

पूज्यप्रवर के स्वागत में विद्यालय के प्रिंसिपल सुरेश कुमार, सरपंच दशरथ कमल की ओर से हिम्मत सिंह ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

व्यवस्था समिति की ओर से विद्यालय परिवार एवं सरपंच का भी सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
12 - 18 दिसंबर, 2022

✦ *धनवान मनुष्य धन के प्रति आसक्ति न रखे, उसका दुरुपयोग व अहंकार न करे तो वह धनवान होने के साथ सद्गुणवान भी होता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

जैतारण के पावन धाम में जैन संप्रदाय की दो धाराओं का सुमधुर आध्यात्मिक मिलन

वाणी का अपव्यय करने वाला कर सकता है पाप कर्म का बंधन : आचार्यश्री महाश्रमण

जैतारण, १ दिसंबर, २०२२

युगप्रधान महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी बांजाकुड़ी से विहार कर जैतारण स्थित स्थानकवासी संप्रदाय के मरुधर केशरी पावन धाम पधारे। आचार्यप्रवर के पदार्पण पर स्थानकवासी संत सुकन मुनि जी ने अपने शिष्यों एवं अनुयायियों के साथ पूज्यप्रवर का भव्य स्वागत अभिनंदन किया। दो संप्रदाय के संतों का यह मिलन जैन एकता और समरसता को नई गति प्रदान कर रहा था। आचार्यप्रवर परिसर में स्थित आचार्य मिश्रीमलजी एवं आचार्य रूपमुनि जी के समाधिस्थल पर भी पधारे। मरुधर केशरी पावन धाम में मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए परम पावन ने फरमाया कि हमारे पास मन की उपलब्धि भी है, वाणी भी हमें प्राप्त है और शरीर भी हमारे साथ है। ये तीन साधन प्रवृत्ति के होते हैं। आदमी मन से स्मृति, कल्पना और चिंतन कर सकता है। वाणी से वह विचारों का आदान-प्रदान करता है। शरीर से अनेक कार्य होते हैं।

भाषा एक ऐसी उपलब्धि है, जिसका अच्छा उपयोग किया जाए तो स्वयं के लिए भी लाभप्रद हो सकता है और दूसरों का भी हित हो सकता है। शास्त्रकार ने सुझाव दिया है कि साधु आदमी मित, परिमित बोले। वाणी का अपव्यय करने वाला कहीं-कहीं पाप कर्म का बंध कर सकता है। असत्य का दोष लग सकता है और आपसी संबंधों में कटुता आ सकती है।

हमारा मिलन दूध और मिश्री के मिलन के समान : समण संघीय प्रवर्तक सुकन मुनिजी

श्रमण संघ के प्रवर्तक सुकन मुनिजी ने कहा कि आज पावन धाम में पावन प्रसंग आप और हम देख रहे हैं। जैतारण जगतारण है। आज हमारे आत्मीय तेरापंथ के महान आचार्य पधारे हैं। सबके साथ इनका स्नेह रहता है। ये महाश्रमण हैं। आचार्यश्री तुलसी गुरु महाराज से यहाँ मिले थे और सारी भ्राँतियाँ दूर हो गई थीं। शंका का समाधान हुआ था। जहाँ भी हम मिलते हैं, साथ रहना होता है। ये तो हमारा ही घर है।

आप यहाँ पधारे, हमें बहुत खुशी है। आपने अहिंसा यात्रा निकाली है। अहिंसा भगवान महावीर का मार्ग है। यह मार्ग गंगा का नीर है। हमारा जीवन भी स्वच्छ रहे। आज दो तटों का मिलन हुआ है। हमारा मिलन दूध और मिश्री के मिलन की तरह हुआ है। संतों का अभिनंदन तो वचनों से होता है। मुनि हितेष जी एवं मुनि परम कुमार जी ने भी अपनी वंदना अभिव्यक्त की।

वाणी के दो विष-अवगुण होते हैं—बात को लंबा करना और कही गई बात में सार बहुत कम है। धर्म की परंपरा में मौन का अच्छा महत्त्व है पर एक दृष्टि से अनावश्यक न बोलना बड़ा मौन है। दोष रहित भाषा यानी अयथार्थ और कटु बात न कहें। किसी पर झूठा आरोप न लगाएँ। मीठा बोलें। विचारपूर्वक बोलना चाहिए। ये बातें वाणी के साथ जुड़ जाती हैं, तो हमारी भाषा संयमयुक्त और उपयोगी बन सकती है।

जैन शासन के पास ज्ञान का अच्छा खजाना है। स्वाध्याय से निर्जरा का लाभ मिल सकता है। ज्ञान और वैराग्य की वृद्धि हो सकती है। जिन शासन में सूक्ष्म अहिंसा, संयम और तप की बात आती है। भगवान महावीर से जुड़ा जिन शासन है। जिन शासन में जो भिन्न-भिन्न लोग दीक्षित हो गए, वो मानो भाई-भाई हो जाते हैं।

आज हमारा जैतारण के पावन धाम में आना हुआ है। प्रवर्तक सुकन मुनि जी महाराज से कई वर्षों बाद मिलना हुआ है। उप-प्रवर्तक अमृत मुनिजी से मेरा ज्यादा परिचय संभवतः नहीं होगा। रूप मुनिजी रजत को तो अनेक बार देखा है। रूप मुनिजी श्रमण संघ के अपने ढंग के व्यक्तित्व थे। अनेक व्यक्तित्व जैन शासन में आते हैं, काम करते हैं और चले जाते हैं। जैन शासन में हमारा मैत्री का भाव परस्पर पवित्र रहे।

हम सब कजजल्याण का काम करते रहें। पावन धाम अच्छा प्रांगण है। शिव मुनि से तो २०१४ में मिलना हुआ था। जैतारण के भी सभी लोग आत्म साधना करते रहें। खूब अच्छा रहे। हमें जैन शासन अध्यात्म का मार्ग मिला है। जो बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। आचार्यप्रवर ने 'जैन धर्म की जय हो' गीत का आंशिक संगान किया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि आचार्यप्रवर परिभ्रमण करते-करते आज जैतारण पावन धाम पधारे हैं। पावन धाम मरूधर केशरी और रूप मुनि की संस्कार-महाप्रयाण भूमि है। आज दो धाराओं का मिलन हुआ है। आचार्य भिक्षु ने मुनि अवस्था में यहाँ चातुर्मास किया था। आगे जैतारण-लारे जैतारण के प्रसंग को समझाया। आचार्यप्रवर ने लंबी यात्राएँ की हैं। अनेक राजनेताओं एवं अनेक धर्म-संप्रदायों के संतों से मिले हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में तख्तराज छल्लानी, डॉ० चंचलराज छल्लाणी, विधायक अविनाश गहलोत, पावन धाम से नेमीचंद चोपड़ा, जैतारण संघ के मंत्री महावीर लोढ़ा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। जैतारण महिला मंडल ने गीत का संगान किया।
कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**